चतुर्थ अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष

चतुर्थ अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष

4.1 अर्थ की जीवन में प्रधानता

4.2 आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी

4.3 आर्थिक शोषण

4.4 आर्थिक संघर्षों का यथार्थ

4.5 बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति

4.6 चोरी, डकैती और लूट

चतुर्थ अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष

मनुष्य जन्म से ही कुछ ऐसी आवश्यकताएं और मूल प्रवृत्तियां लेकर पैदा होता है, जिनकी संतुष्टि के लिए उसे आर्थिक जगत में प्रवेश करना ही पड़ता है। प्रत्येक युग का जीवन आर्थिक मूल्य से अवश्य प्रभावित होता है क्योंकि अर्थ के बिना समाज में जीवन यापन करना असंभव है। समाज का विकास अर्थ पर आधारित है। अर्थ के कारण ही समाज में उतार-चढ़ाव पैदा होते हैं। अर्थ के द्वारा ही किसी व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा का अनुमान लगाया जाता है। अर्थहीन व्यक्ति की समाज में उपेक्षा की जाती है। "चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में अर्थ प्राप्ति को वित्तीय स्थान पर रखा गया है। अर्थ प्राप्ति साधन मूल्य माना जाता है। आज के भौतिकवादी दौर में अर्थ व्यक्ति तथा समाज के विकास का मेरुदंड बन गया है।"[1] मनुष्य की आर्थिक स्थिति परिवार और समाज में उसकी हैसियत तय करती है। आज के समय में मनुष्य का किसी भी तरह से पैसा पाना लक्ष्य बनता जा रहा है। अर्थ उत्पादन की पद्धति ने नैतिकता को पीछे छोड़ दिया है। साथ-साथ समाज में आर्थिक विषमता बढ़ती जा रही है। धर्मवीर भारती के अनुसार "मार्क्स ने अपने दर्शन में स्पष्ट रूप से कहा है कि यह सारा दोष वस्तुतः इस व्यवस्था का है जिसमें स्वातंत्र्य, गौरव, करुणा, सौंदर्य और सुख यह शब्द निरर्थक हैं। असंगतियों से भरे हुए हैं और केवल तभी इनमें अर्थ की प्रतिष्ठा हो सकती है जब समाज का वैषम्य दूर हो जाए और वर्ग-वर्ग का भेद मिट जाएगा।"[2] इसी आर्थिक असमानता को समाप्त करने के उद्देश्य से समाजवाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद जैसी विचारधाराएं अस्तित्व में आई। उपभोक्तावाद, भूमंडलीकरण, पूंजीवाद, बाज़ारवाद के विशाल प्रभावों ने इन विचारधाराओं को भी प्रभावित किया है इसीलिए विशेषत: शहरी इलाकों में वर्ण व्यवस्था का स्थान आर्थिक स्थिति पर आधारित वर्ग व्यवस्था ने ले लिया। "वर्ग जनित मूल्यों की सृष्टि में भूमि, पूंजी एवं श्रम तीन प्रमुख सृजक तत्व माने जा सकते हैं। वर्ग भावना के आधार बिंदु भी यही तत्व हैं। निर्धन अथवा धनवान, निम्न तथा उच्च वर्ग का निर्धारण भी इन्हीं तत्वों के माध्यम से होता है।"[3] पूंजी, भूमि एवं श्रम के मूल्य तथा स्वामित्व में जहां संतुलन होता है, असमानता कम होती है, संतोष अधिक होता है। आर्थिक विषमता बढ़ती है, तभी

असंतोष, कुंठा, अराजकता और क्रांति की स्थिति उत्पन्न होती है। धनी और निर्धन की बीच की सीमा को दूर करने के बारे में गांधी जी का कहना था कि आर्थिक समानता के लिए कार्य करने का अर्थ है पूंजी और श्रम के बीच निरंतर टकराव को समाप्त करना। इसका अर्थ है उन धनी लोगों को नीचे उतारकर समानता के स्तर पर लाना जिनके हाथ में राष्ट्र की अधिकार संपत्ति केंद्रित है और दूसरी तरफ लाखों अधभूखे नंगे लोगों को अन्य से समानता के स्तर पर पहुंचाना। गांधी जी सभी लोगों को आर्थिक स्तर पर समान देखना चाहते थे। गांधी जी का यही एक उद्देश्य था कि उनके राष्ट्र में कोई भी व्यक्ति-व्यक्ति में भेदभाव न हो। वह सामाजिक तथा आर्थिक रूप में सबको समान देखना चाहते थे। आधुनिक जगत में अर्थ व्यक्ति और समाज का केंद्र बिंदु बन गया है। स्पष्ट रूप से कहा जाए तो आज अर्थ जीवन के केंद्र में आ गया है, जिसके कारण बाकी सभी संबंध भी इसी से संचालित होने लगे हैं। वर्तमान समय में तो व्यक्ति अन्य लोगों से इसीलिए संबंध बनाता है अगर उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। आर्थिक स्थिति के कारण ही व्यक्ति समाज में मापा तथा आंका जा रहा है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में भी समाज में अर्थ के महत्व को स्वीकार किया गया है। समाज में उतार-चढ़ाव का कारण ही अर्थ है। जिससे बढ़ती हुई जीवन व्यवस्था ने मनुष्य को अर्थ केंद्रित बना दिया है। आज मनुष्य के लिए पैसा, पद और प्रतिष्ठा ही महत्वपूर्ण रह गए हैं बाकि सब संबंध गुणहीन हो गए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में आर्थिक मूल्यों के प्रति आस्था कम और आर्थिक स्वार्थों की पूर्ति अधिक देखी गई। आज का व्यक्ति समस्त मानवीय मूल्यों को नज़र अंदाज कर अर्थ प्राप्ति में जुट गया है। लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में आर्थिक विषमता के इन्हीं पहलुओं का उद्‌घाटन किया है। इनके उपन्यास साहित्य में आर्थिक विषमता के मनोवैज्ञानिक पक्ष के उदाहरण देखने को मिलते हैं। व्यक्ति जीवन की सार्थकता को उन्होंने पात्रों के माध्यम से पेश किया है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में वर्तमान युग में मूल्यों के आर्थिक पक्ष को चित्रित करने का सफल प्रयत्न किया है। विवेच्य उपन्यास साहित्य में अर्थ से संबंधित मूल्यों की स्थिति का वर्णन इस तरह है:-

4.1 अर्थ की जीवन में प्रधानता

मूल्य एक आर्थिक अवधारणा होने के कारण इसका संबंध अर्थ से माना गया है। अर्थ जीवन की धुरी है। इससे सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। समाज में विचरण करने के लिए अर्थ अत्यधिक आवश्यक है। समाज का संपूर्ण ढांचा अर्थव्यवस्था पर ही आधारित है। आज देश भर में जहां बड़े-बड़े अधिकारी और उद्योगपति हैं वहीं कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्हें अर्थाभाव की स्थिति से जूझना पड़ता है। उनके लिए धन महत्वपूर्ण मूल्य है। प्रस्तुत उपन्यास 'बेतवा बहती रही' में लेखिका ने पात्रों के माध्यम से जीवन में अर्थ के महत्व को पेश किया है। उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्र उर्वशी की शादी उसके भाई अजीत के लिए सिरदर्दी बन गई है। अजीत बिना दहेज़ के उर्वशी की शादी करवाना चाहता है। जहां पर लोग उर्वशी से बिना दहेज़ के शादी करने को राजी थे वहीँ पर उन लोगों की मांग थी कि बारात की अच्छे से खातिरदारी अर्थात मेहमानवाजी की जाए लेकिन रंजीत को ऐसे रिश्ते बिल्कुल भी हज़म नहीं होते थे। अजीत एक ऐसा रिश्ता चाहता था कि कोई खुद का खाकर उर्वशी को बिना दहेज़ के ले जाए। अजीत की एक और लालसा थी कि उर्वशी को ऐसा घर मिले जिसमें कि अजीत को भविष्य में भी सहायता मिल सके । इस तरह अजीत ने एक ऐसा रिश्ता ढूंढ लिया जिसमें उसने अपने मां-बाप की भी नहीं सुनी "यही सोच कर दुहेजु वर तलाश लिया। चार बच्चों के पिता उर्वशी को प्रसन्नतापूर्वक ब्याहने को तैयार था। अजीत की कौड़ी भी खर्च नहीं होती।"[5] इस तरह अजीत ने एक चार बच्चों के बाप का रिश्ता उर्वशी के लिए ढूंढा। जिन लोगों को दहेज़ तथा अच्छी खातिरदारी की कोई जरूरत नहीं थी। उन्हें सिर्फ एक लड़की चाहिए थी जोकि उन्हें मिल रही थी। यहां पर अजीत तथा लड़के वाले दोनों की मांगें पूरी हो रही थी। इस रिश्ते में उर्वशी के हित को नज़रअंदाज किया जा रहा था। अजीत को यह रिश्ता पसंद था क्योंकि इसमें उसके लिए एक रुपए का भी खर्च नहीं था। इस तरह यहां पर एक भाई अर्थ को महत्व देकर बहन के हित को अनदेखा कर रहा है। भाई-बहन के रिश्तो में पैसे को मुख्य रखा गया है। अजीत अपनी आर्थिकता को धक्का नहीं लगाना चाहता। यहां पर अजीत की स्वार्थता को देखा जा सकता है। वह बहन की शादी करके भविष्य के लिए उन लोगों से आर्थिक सहायता की मंशा भी रखता है। इस तरह यहां पर एक स्वार्थी पुरुष पात्र नज़र आया है। यहां पर 'एक तीर से दो निशाने' साधने वाली उक्ति सही बैठती है। अजीत चाहता है कि बहन

की शादी भी हो जाए और उसकी जेब से एक रुपया भी खर्च न हो। इसी कारण अजीत चार बच्चों के बाप से उर्वशी का विवाह करने के लिए राजी हो जाता है। इस तरह लेखिका ने यहां पर समाज की स्थिति का चित्रांकन करते हुए विघटित होते मूल्यों के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। उर्वशी के पड़ोस का एक दादा तथा उसका बाप इस रिश्ते का विरोध करते हैं। वहीँ पड़ोस के काका को उसके विवाह की बहुत चिंता सताती है। काका तथा उर्वशी का कोई खून का रिश्ता नहीं है लेकिन फिर भी काका उर्वशी के लिए एक अच्छा घर तथा वर ढूंढना चाहते हैं। काका उर्वशी के बाप को तसल्ली देते हैं कि अगर भाई, बहन की शादी में पैसा नहीं लगाता तो कोई बात नहीं हम शादी के लिए बैंक ऋण की बात कर लेंगे। वह लड़की को अच्छा घर ढूंढने के लिए ऋण की सहायता लेना चाहते हैं। काका बोलते हैं कि ऋण तो धीरे-धीरे हम भर सकते हैं लेकिन लड़की का विवाह बार-बार नहीं कर सकते। इस प्रकार जहां उपन्यास में अपने लोग अपनों से ही मुंह फेरते हुए दिखाए गए हैं वहीं पर दूसरी ओर काका जैसे लोग उर्वशी की शादी में आर्थिक सहायता करते हैं। वर्तमान समय की परिस्थितियों को सामने रखकर ही लेखिका ने अपने उपन्यासों की रचना की है।

आधुनिक समाज में भी प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति को मज़बूत करने में लगा हुआ है। आर्थिक स्थिति के समक्ष अपने रिश्ते को भूलता जा रहा है। पैसा ही आज के समय में प्रधान दिखाई देता है। आज के समय में धन का महत्व इतना बढ़ गया है कि हर व्यक्ति इसकी प्राप्ति में लगा है। आज की युवा पीढ़ी पारिवारिक दायित्वों का बोझ नहीं उठाना चाहती है। इस तरह दादा तथा उर्वशी का बाप ऋण लेकर उसकी शादी एक अच्छे घर में कर देते हैं लेकिन भाग्य की विडंबना है कि उर्वशी कुछ दिनों बाद विधवा हो जाती है। यहां पर फिर अजीत के मन में एक अन्य लालच जागृत हो जाता है। अजीत ने उर्वशी की दूसरी शादी के लिए एक अन्य सौदा कर लिया होता है। अजीत यह सौदा अपनी बहन के ससुराल वालों के साथ करता है। "कौन मुफ्त में करदई विदा दस बीघा खेत लिखा लऔ अपने नाम।"[6] यहां पर उर्वशी का रिश्ता तीन बच्चों के बाप से तय कर दिया जाता है। यह व्यक्ति उर्वशी की सहेली मीरा का पिता होता है जिसकी पत्नी की मृत्यु हो गई होती है। यह रिश्ता अजीत ने दस बीघा ज़मीन लेकर तय किया था। अजीत ने अपनी बहन के रिश्ते के लिए इतना बड़ा सौदा किया।

अजीत अपने रिश्तो में भी धन कमाने की मंशा रखता देखा गया है। ऐसा पापी भाई जो अपनी बहन को ही बेच देता है। यहां पर अजीत ने उर्वशी की शादी के लिए भेड़-बकरियों की तरह सौदा किया है। यहां पर एक भाई-बहन के रिश्ते को आर्थिक पक्ष के रूप में रखकर वर्णित किया है। आधुनिक समाज को मध्य नज़र रखते हुए लेखिका ने अपने उपन्यासों की रचना की है। आज के समाज में अर्थ का इतना बोलबाला है कि लोग मानवीय संबंधों को भूलते जा रहे हैं। संबंधों का परंपरागत स्वरूप समाप्त होता जा रहा है। इसी कारण मूल्यों पर खतरा मंडराने लगा है। अर्थ का सबसे अधिक प्रभाव सामाजिक संबंधों पर पड़ा है। यह संबंध पैसे के कारण टूटते-बिखरते देखने को मिलते हैं। अतः धन की होड़ में सभी संबंध खोखले होते जा रहे है। इसी उपन्यास में दूसरी तरफ शशिरंजन नाम का एक कर्तव्यनिष्ठ भाई का चित्रण हुआ है। शशिरंजन एक सरकारी अफसर है। शशिरंजन की एक बहन होती है। उसकी बहन की शादी तय हो गई होती है लेकिन शादी के दिन ही उसकी शादी टूट जाती है। जिसका प्रमुख कारण ससुराल वालों की दिन-प्रतिदिन धन के प्रति बढ़ती लालसाए होती हैं। शशिरंजन अपनी बहन का रिश्ता बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयत्न करता है लेकिन लड़के वालों की मांग में कोई कमी नहीं आती "आप ऐसा मत सोचिए कि आप की मांग पूरी नहीं करूंगा। नई नौकरी है, इतना जोड़ नहीं सका। कुछ समय की मोहलत...।"[7] शशिरंजन ने वर पक्ष वालों से बहुत विनती की लेकिन वर तथा उसका पिता नहीं माने। लड़के वालों ने लड़की के भविष्य की चिंता न करते हुए पैसे के खातिर रिश्ता तोड़ दिया। बिना शादी के ही बारात वापस लौट गई। उपन्यास में लालची प्रवृत्ति के लोगों का चित्रण हुआ है। यहां पर इंसान इंसानियत के रिश्ते को भूलकर अर्थ को प्रधानता देता है। लड़के वाले अपनी मांग को पूरा न होते देखकर एक लड़की को ठुकरा कर चले जाते हैं। इस तरह उपन्यास में जहां एक तरफ अजीत जैसा भाई है जो की बहन की शादी करने से मुंह फेर लेता है, वहीं दूसरी तरफ शशिरंजन जैसा भाई अपनी पूरी कमाई को लगाकर बहन के घर को बसाना चाहता है। इस तरह उपन्यास में जहां पर आर्थिक मूल्य के पतन को दिखाया है, वहीं पर आर्थिक मूल्य विकास के लिए भी पर्यत्न होते नज़र आते हैं। इस प्रकार वर्तमान युग में भी भाई-बहन के संबंधों की ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। हम सभी रिश्तो को एक ही तराजू में

नहीं तोल सकते क्योंकि कुछ रिश्ते आज भी अपनी मर्यादाओं में रहते हुए आर्थिक मूल्य के विकास पर बल देते हैं। इतना कहना कठिन है कि सभी रिश्तो में प्रेम, सहानुभूति है क्योंकि कुछ रिश्ते ही अर्थ के कारण बनते हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि जो संबंध अर्थ को लेकर बनते हैं, उनकी स्थिरता बहुत कम समय की होती है। लेखिका ने ऐसा ही चित्रण उपन्यास में किया है।

'इदन्नमम' शीर्षक उपन्यास में एक परित्यक्ता कुसुमा नाम की स्त्री का चरित्र चित्रण किया है। कुसुमा की शादी एक अच्छे घर में की जाती है। कुसुमा के मायके वाले गरीब होते हैं लेकिन वह अपनी बेटी की एक ऊंचे खानदान में शादी करते हैं। कुसुमा देखने में सुंदर होती है जिसके कारण उसे एक अच्छा घर मिल जाता है। कुसुमा शादी करके अपने ससुराल आ जाती है लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण वह पति को नहीं जचती। यशपाल कुसुमा को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं करता है तथा शादी के कुछ दिन बाद ही कुसुमा को त्याग देता है। इस तरह उपन्यास में कुसमा एक परित्यक्ता नारी के रूप में जीवन व्यतीत करती है "सपने देखे ही थे तो मान प्रतिष्ठा वाले घर के लिए उतना दहेज़ काहे नहीं जुटा पाए? काहे नहीं कर पाए घर वर की इच्छा पुरन ?"[8] यहां पर कुसमा अपने मायके वालों को शिकायत करती है कि उन्होंने इतना बड़ा घर ढूंढ दिया लेकिन ससुराल के लायक उसे दहेज़ नहीं दिया। जिसके कारण वह अपने पति के दिल में घर नहीं कर सकी। कुसुमा अपने पति की आशाओं पर खरी नहीं उतर पाती क्योंकि यशपाल को अच्छा-खासा दहेज़ चाहिए था जोकि कुसुमा विवाह में अपने साथ नहीं लाई थी। जिसके कारण उन दोनों का रिश्ता सफल नहीं हो पाया। यहां पर लेखिका ने पैसे को महत्व देते पात्र का चित्रण किया है। यहां पर रिश्तो को न निभाते हुए अर्थ को प्रधानता देते हुए दिखाया है। आज के युग में मनुष्य धन के प्रति इतना आकर्षित हो गया है कि उसे अपने सामाजिक संबंधों की बिल्कुल भी चिंता नहीं है। उपन्यास में लेखिका ने क्रेशर पर काम करने वाले मज़दूरों की जीवन कथा को चित्रित किया है। यह मज़दूर अपने साथ-साथ बच्चों को भी काम पर लगाते हैं। इनके लिए सबसे प्रमुख मज़दूरी करके पैसा कमाना होता है "इनके तो बिटिया पैदा पीछे होते हैं, काम-धंधे की पहले सोचने लगते हैं बाप-मताई।"[9] उपन्यास की पात्र मंदा इन मज़दूरों के भविष्य को लेकर चिंता व्यक्त करती दिखाई गई है। मंदा देखती है कि क्रेशर पर काम करने वाले

छोटे-छोटे बच्चे भी होते हैं। मंदा काका के साथ कहती है कि जहां इन बच्चों की उम्र पढ़ने-लिखने तथा खेलने की है लेकिन इन्हें तो यहां काम करना पड़ता है। मंदा को काका समझाते हैं कि इनके मां-बाप पैदा होते ही इन्हें काम लगाने की सोचते हैं। इनका जन्म ही पैसे को कमाने के लिए उद्देश्य से किया जाता है। लेखिका ने एक अनपढ़ मज़दूर समाज का वर्णन किया है। जिन्हें शिक्षा व्यर्थ नज़र आती है। इनके लिए पैसा कमाना ही प्रमुख दिखाया गया है। उपन्यास की नायिका मंदा इन मज़दूरों के बच्चों को स्कूल भेजना चाहती हैं लेकिन इन्हें पढ़ाई का कोई ज्ञान नहीं है। मज़दूरों को सिर्फ पैसा चाहिए जिसके कारण वे अपना जीवन यापन कर सके। इसके अंतर्गत वह अपने बच्चों को भी इसी कार्य में लगाते हैं। इन मज़दूरों को यह नहीं पता कि वह अगर अपने बच्चों को स्कूल भेजेंगे तो आगे चलकर उन्हें अच्छी आय का स्रोत बन जाएगा। यहां पर लेखिका ने मज़दूर वर्ग की मानसिकता का वर्णन किया है। जिनके लिए अर्थ प्रधान है न कि बच्चों का भविष्य। वर्तमान समय में भी ऐसी ही स्थिति समाज में देखने को मिलती है। हमारे आसपास झुग्गी झोपड़ियों में तथा सड़कों पर भीख मांगते बच्चे नज़र आते हैं। जिनका एकमात्र जीवन का लक्ष्य धन कमाना है। चाहे वह मांग कर ही क्यों न कमाएं? लेखिका ने अर्थ की प्रधानता को कथा के माध्यम से वर्णित किया है। लेखिका ने बताया है कि व्यक्ति पैसे को मुख्य रखकर अपने रिश्ते नाते तथा भविष्य को भूल गया है। आर्थिक समृद्धि की लालसा के कारण आज की युवा पीढ़ी अपने मूल्यों को अनदेखा कर रही है। लेखिका ने पैसे को प्राथमिकता देते पात्रों की मानसिकता का यथार्थ रूप में चित्रण किया है।

लेखिका ने अपने 'चाक' उपन्यास में साहूकार वर्ग का वर्णन किया है। यह साहूकार धन से संबंधित होते हैं। इनके पास खूब पूंजी होती है। ऐसे ही एक साहूकार पात्र का वर्णन उपन्यास में देखने को मिलता है। कथा में एक भवानीदास नाम का साहूकार सामने आता है। भवानी दास के लिए पैसा ही सब कुछ है। उसके लिए पैसा ही मां-बाप है। पैसे के साथ ही सब रिश्ते संबंधों को देखता तथा परखता है। भवानीदास एक ऐसा चरित्र है जो कि अपराधी लोगों का साथ भी देता है। उपन्यास में एक डोरिया नामक पुरुष पात्र है जो कि अपराध प्रवृत्तियों का खज़ाना है। डोरिया ने अपनी गर्भवती भाभी को मौत के घाट उतार

दिया। इस अपराध के कारण डोरिया को बहुत बड़ी सजा दी जाने वाली थी लेकिन भवानीदास ने पैसे के बल पर डोरिया की जमानत करवा दी। इस तरह उपन्यास में पैसे के खातिर लोग अन्याय का साथ देते हुए दिखाई देते हैं। जहां पर मानवीय मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है। इस तरह उपन्यास में अर्थ को प्रमुख मानते हुए मानवता को अनदेखा किया गया है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में केहर सिंह नाम का एक पुरुष पात्र सामने आता है जोकि अर्थ कमाने का एक अलग ही मार्ग अपनाता देखा गया है। केहर सिंह औरतों को अपनी बातों में फंसा कर उन्हें भगा लेता है। औरतें भी केहर सिंह को अपना विश्वासपात्र मानकर उनकी बातों में फंसती दिखाई गई है। केहर के साथ आई औरतों के पति जब अपनी पत्नी को मांगते हैं तो केहर उन पुरुषों से मनचाही रकम मांगता है। केहर सिंह अपने सुंदर पहनावे के कारण औरतों को अपने जाल में फंसाता तथा भगा लेता है। इस तरह उपन्यास में धन का महत्व बढ़ जाने से हर व्यक्ति इसकी प्राप्ति में लगा है। चाहे वह धन प्राप्ति के लिए गलत रास्ता ही क्यों नहीं अपना लेता है? वर्तमान युग में भी ऐसी ही स्थिति समाज में देखने को मिलती है। आज भी औरतों के शरीर को बेचा जाता है तथा मनचाहा पैसा वसूल किया जाता है। आज के युग में अर्थ ने इतने पैर पसार दिए हैं कि दानव प्रवृत्ति के व्यक्ति बच्चों का व्यापार भी करने लग गए हैं। बच्चों को बेच दिया जा रहा है। यहां तक कि बच्चों के शरीर के अंगों को भी धन प्राप्ति का साधन बना लिया गया है। इस प्रकार आर्थिक मूल्य का दिन-प्रतिदिन पतन होता दिखाया जा रहा है। कहने का भाव है कि मानव, मानव नहीं रहा बल्कि दानव बनता जा रहा है। इस तरह लेखिका ने अपने उपन्यास में आर्थिक महत्व का सटीक वर्णन किया है। आधुनिक युग में बिना धन के जीवनयापन की कल्पना नहीं की जा सकती है। समाज का अर्थ प्रधान चिंतन ही व्यक्ति को अर्थ केंद्रित बनाता है। जिसके कारण व्यक्ति अर्थ कमाने के लिए अपने मूल्यों से पिछड़ता जा रहा है। व्यक्ति अनैतिकता के मार्ग की ओर अग्रसित होता जा रहा है। व्यक्ति समस्त मानवीय मूल्यों के साथ-साथ अर्थ प्राप्ति को भी सर्वाधिक महत्व देता है। उपन्यास में अर्थ प्राप्ति के लिए व्यक्ति गैर कानूनी कार्यो को भी इजांम देता हुआ दिखाया है। इस तरह मनुष्य का मुख्य लक्ष्य धन कमाना है। आज के भौतिकवादी दौर में सुख-सुविधाओं के

साधन बढ़ जाने के कारण प्रत्येक व्यक्ति साधन संपन्न होना चाहता है। इसके लिए व्यक्ति मेहनत नहीं करना चाहता बल्कि गलत कार्यों के मार्ग को अपना लेता है। व्यक्ति के अंदर आर्थिक मूल्य की रक्षा के प्रति रुचि कम होती जा रही है तथा व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति में व्यस्त होता जा रहा है।

'अगनपाखी' उपन्यास में अर्थ लोलुपता देखने को मिलती है। अर्थ प्राप्ति की बढ़ती लालसा ने संबंधों में तनाव पैदा किया है। यहां पर व्यक्ति से अधिक महत्व धन को दिया जाता है। व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक संपन्नता को महत्व देता हुआ दिखाया है। उपन्यास में एक पात्र आर्थिक रूप से संपन्न होते हुए भी अपनी विगत पीढ़ी को आर्थिक संपन्न करने के लिए अपनी ही बेटी समान साली के जीवन के साथ खिलवाड़ करता दिखाया गया है। यहां पर अपने बेटे की नौकरी के लिए अपनी साली का विवाह एक पागल लड़के के साथ कर दिया जाता है। यह रिश्ता भी एक सौदे की तरह होता है, जिसको मध्य रखकर नौकरी तय होती है। भुवन के रिश्ते में लेन-देन का भाव समाहित रहता है। यहां पर भुवन अपने जीजा को पिता के समान मानती थी लेकिन उसी जीजा ने उसके जीवन के साथ सौदेबाजी खेली। यह सौदा अद्धपगले लड़के के भाई तथा भुवन के जीजा के बीच होता है। इस तरह उपन्यास में धनार्जन के लिए अपनी साली का जीवन बर्बाद करते देखा जा सकता है। यहां पर लेखिका ने अर्थ की जीवन में प्रधानता का वर्णन किया है। दूसरी तरफ लड़के के भाई का भी मंतव्य अद्धपगले भाई का इलाज न करके उसकी ज़मीन को अपने नाम करवा लेना होता है। अजय सिंह नहीं चाहता कि उसका पागल भाई ठीक हो क्योंकि अगर विजय ठीक होता है तो वह अपनी ज़मीन का हिस्सा मांगेगा "सास इतना नहीं जानती कि बड़ा बेटा कैसा चालबाज है वह छोटे को ठीक क्यों करवाएगा? लोग हिस्सेदारी को ज़हर देने से नहीं चूकते।"[10] भुवन जब शादी करके ससुराल जाती है तो वह वहां की स्थिति को भाप लेती है। भुवन को पता चल जाता है कि जेठ ने मां को भी अपनी बातों में ले रखा है जिसके कारण मां भी अजय की मंशा को समझ नहीं पाई है। भुवन को पता चल जाता है कि बड़ा भाई, छोटे भाई को ठीक नहीं करवाएगा क्योंकि वह तो ज़हर देने को भी तैयार बैठा है ताकि विजय की ज़मीन पर कब्जा कर सके। इस तरह भुवन ने घर में ज़िद्द करके विजय को आगरा पागलखाने में भर्ती करवा दिया ताकि वह ठीक होकर जल्दी घर वापस

आ जाए। भुवन की इच्छा थी कि वह विजय के साथ अस्पताल में रहे लेकिन अजय ने उसे वहां रहने की अनुमति नहीं दी। अजय का इसके पीछे एक रहस्य होता है कि वह विजय को ठीक करके घर वापस नहीं लाना चाहता था इसीलिए भुवन को वहां रहने नहीं दिया जाता। इस तरह एक दिन आगरा से विजय का शव घर आ जाता है। यह भी एक भाई द्वारा चली गई चाल ही होती है। अजय चाहते थे कि भुवन सती हो जाए लेकिन भुवन सती होने के लिए नहीं मानी तथा वह घर से भाग निकली। अजय ने ज़मीन के कागजों पर भुवन को भी मृत घोषित कर ज़मीन जायदाद को अपने नाम लिखवा लिया। इस तरह उपन्यास में मनुष्य की सोच तथा समाज का वर्णन किया है। जिसे अर्थ ने इतना संकुचित कर दिया है कि यहां भाई, भाई के रिश्ते को भूल गया है। मनुष्य अपनी मान-मर्यादा को तथा रिश्तो को भूलकर धनवान बनना चाहता है। पैसे के बल पर किसी को भी खरीद सकता है जैसे अजय ने चंदर को नौकरी दिलवा कर भुवन को खरीद लिया था। यूं तो प्रत्येक युग में अर्थ ने समाज और मनुष्य को प्रभावित किया है परंतु वर्तमान युग में अर्थ ने असाधारण रूप से मनुष्य को प्रभावित किया। इक्कीसवीं सदी में प्रत्येक काम को पैसे के बल पर साधा जाता देखा गया है।

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में एक पुरुष पात्र प्रेम विवाह करवा लेता है लेकिन उसके घर वाले उसके विवाह के विरुद्ध होते हैं। यह पात्र स्वीटी तथा विजेंद्र नाम के होते हैं। घरवाले उन दोनों को ढूंढते हैं लेकिन दोनों का कहीं कुछ पता नहीं चलता। इस तरह घर वालों ने उन दोनों को ढूंढने वाले के लिए इनाम रख दिया ताकि लोग लालच में आकर किसी न किसी रूप में उन दोनों की खबर घर में अवश्य देंगे "उनको जिंदा या मुर्दा पकड़ लाने पर इनाम बोला गया- एक लाख रूपया।"[11] गांव में स्वीटी तथा विजेंद्र के भागने की खबर आग की तरह फैल जाती है। जब यह इनाम वाली बात लोगों तक पहुंचती है तो लोगों ने किसी न किसी तरह उन दोनों की खबर घर में दे दी तथा स्वीटी तथा विजेंदर पकड़े गए। उन दोनों को घर बुलाया तथा मौत के घाट उतार दिया जाता है। इस तरह उपन्यास में पैसे की प्रधानता का चित्रण किया गया है। पैसे के बल पर उन दोनों को पकड़ा जाता है। इनाम के नाम पर काम कल की बजाय आज होता देखा गया है। सरकारी संस्थाओं में ही पैसे का यह रूप नहीं चलता बल्कि

सामाजिक संबंधों में भी पैसे का क्रुर रूप देखने को मिलता है। इसी उपन्यास में एक अन्य स्त्री पात्र कम्मो सामने आती है जिसकी भाई से जायदाद के लिए अनबन चल रही होती है लेकिन भाई द्वारा कम्मो को घर बुलाकर उसकी हत्या कर दी जाती है। दोनों भाई-बहन में बहुत प्रेम था लेकिन न जाने कम्मो के मन में ज़मीन को बांटने की बात आती है और भाई उसका दुश्मन बन जाता है। भाई ने उसे ज़मीन के कारण अपने दिल से उतार दिया तथा उसकी जीवन लीला को खत्म करने पर उतारू हो जाता है। घर आई बहन ने भाई की कलाई पर राखी बांधी लेकिन भाई ने उसकी जीवन लीला ही खत्म कर दी। "पलक झपकते ही गोलियां चला दी। पिस्तौल के ताबड़तोड़ फायर बहन की देह पर गुजर रहे थे।"[12] यहां पर भाई ने अर्थ अर्थात ज़मीन के लिए अपनी बहन की हत्या कर दी। भाई-बहन एक ही रिश्ते में, एक ही खून के होते हैं। वहीं पर एक भाई अपने हाथों को बहन के खून से रंग लेता है। उपन्यास में धन के लिए दो रिश्ते टूटते देखे गए हैं। आज धन के आकर्षण में मनुष्य अपने आदर्शात्मक मूल्यों को नज़रअंदाज कर रहा है। इस समस्या के कारण समाज की जड़ें भीतर ही भीतर खोखली होती जा रही हैं। लेखिका ने इस समस्या का वर्णन 2011 में लिखित उपन्यास में किया है लेकिन आज भी यह समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आज के समाज में सुप्रीम कोर्ट ने पिता की जायदाद में बेटी के हक को बहाल किया है। भारतीय समाज फिर भी इस फैसले को मानने के लिए तैयार नहीं है। भारतीय समाज में शादी के बाद बेटी का अपने बाप की जायदाद में कोई हिस्सा नहीं रहता। अगर बेटी अपने पिता से जायदाद का हक मांगती है तो भाई उसके दुश्मन बन जाते हैं। आज के समय में धन पारस्परिक संबंधों को टूटने का प्रमुख कारण बन गया है। अर्थ के कारण नैतिक मूल्यों में ह्रास की स्थिति पैदा होती जा रही है। उपन्यास में धन का संबंधों पर बढ़ते प्रभाव को पात्रों के द्वारा चित्रित किया गया है। अर्थ के कारण आज हर रिश्ता कमज़ोर पड़ने लगा है। आज के समय में अर्थ की आवश्यकता इतनी बढ़ गई है कि व्यक्ति पैसे कमाने का कोई न कोई रास्ता ढूंढ लेता है। आज की नवयुवक पीढ़ी मेहनत करके कमाना नहीं चाहती बल्कि इधर-उधर से अनैतिक कार्यों में कार्यरत होकर धन कमाने को उचित ढंग समझती है। उनका मानना है कि धन मिलना चाहिए। इसमें उचित-अनुचित का कोई तथ्य विराजमान नहीं है। समाज में

आर्थिक विषमता के परिपेक्ष्य में विकसित निर्धनता इसका सबसे बड़ा कारण है। आर्थिक आवश्यकताओं तथा निर्धनता के कारण ही गैर कानूनी कार्य को अपनाया जा रहा है। व्यक्ति की ज़रूरते ही बहुत बढ़ गई हैं लेकिन उसके पास उन्हें पूरा करने के साधन नहीं होते हैं, जिसके कारण व्यक्ति निर्धनता में घुसता चला जाता है तथा वह निर्धनता को दूर करने के लिए मेहनत को नहीं बल्कि अनैतिकता के मार्ग को अपना लेता है।

उपन्यास 'फ़रिश्ते निकले' में कुछ ऐसे ही पात्र देखने को मिलते हैं जो अपना भरण-पोषण लोगों का अपहरण करके कमाए गए पैसों से करते हैं "पिताजी तो अपहरण पर जा रहे हैं। आप पचास लाख रूपया का इंतजाम लड़कों से कराकर पिताजी को छुड़वा लेना।"[13] उपन्यास में कुछ लोगों ने एक ऐसा दल बना रखा है जिसमें आठ-नौ जवान लड़का- लड़की शामिल हैं। यह युवाओं का दल अपरिचित लोगों का अपहरण करते हैं तथा उन्हें घरवालों को वापिस करने के लिए अपनी मनपसंद रकम वसूल करते हैं। ऐसे ही यह युवक मंडली एक रिटायर्ड मजिस्ट्रेट को पकड़कर गुमराह कर लेते हैं। जिसमें उनकी पत्नी भी होती है लेकिन वह पत्नी को छोड़ देते हैं। उनका पत्नी को छोड़ने का प्रमुख कारण यह होता है कि पत्नी घर पर बता कर पैसों का इंतजाम करें। पत्नी को कहते हैं कि आप घर से लाकर पचास लाख दे दो तथा हम आपके पति को छोड़ देंगे। इस तरह उपन्यास में पैसे को प्रधानता देते पात्रों का चित्रण सामने आया है। उपन्यास में अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए अन्य कामों में निपुण न होने के कारण धन के लिए कोई भी काम करने को तैयार नवयुवक मंडल का वर्णन किया गया है। आर्थिक मूल्य से पिछड़ रहे पात्रों का वर्णन मिलता है। वर्तमान समाज में भी ऐसी ही स्थिति कई जगह पर देखने को मिलती है। आज की पीढ़ी भी ऐसे कार्यों को करती देखी जा रही है। वर्तमान समय में भी ऐसे ही अपहरण हो रहे हैं। जिनका मुख्य उद्देश्य धन प्राप्ति ही रह गया है। आज का व्यक्ति दिहाड़ी मज़दूरी करके कमाने में लज्जा अनुभव करता है इसीलिए अपने भरण-पोषण के लिए धन को इधर-उधर से कमाना ही अधिक उचित मानता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास तथा आज के समय में कितनी समानता देखने को मिलती है। आज के भौतिकवादी दौर में सुख-सुविधाओं के साधन बढ़ जाने के कारण प्रत्येक व्यक्ति साधन संपन्न होना चाहता है लेकिन वह साधन संपन्न मेहनत द्वारा नहीं गलत कार्यों

को करते हुए देखा गया है। जिसमें यह व्यक्ति की सोच है। व्यक्ति को दूसरों से कोई महत्व नहीं रह गया है। विवेच्य उपन्यास में लेखिका ने अर्थ की प्रधानता के कारण पात्रों के संबंधों, उनकी मानसिकता और मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाया है। दिन-प्रतिदिन आर्थिक मूल्य विघटन का चित्रण उपन्यास के माध्यम से देखा जा सकता है ।

4.2 आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी

आज के दौर में महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। चाहे वह स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, अस्पताल, कारखाने का क्षेत्र हो या खेल का मैदान, खेत हो या खलिहान हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के साथ रात-दिन काम कर देश के विकास में सलंग्न हैं और देश के आर्थिक विकास में सहयोग दे रहे हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में नारी को त्याग, समर्पण, उदारता और ममता की मूर्ति माना जाता है। यही नारी का आदर्श रूप है परंतु युग परिवर्तन के साथ-साथ आज की नारी के रूप में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वह मुक्ति का समर्थन करने लगी है। आज की नारी स्वतंत्रतापूर्वक रहने की मांग करती देखी गई है। पुरुषों की भांति वह भी समान अधिकार पाना और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहती है। आज के युग की नारी शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात अपना रास्ता स्वयं तय करती है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, डॉक्टर, पायलट, इंजीनियर, प्रोफेसर, अध्यापक सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी छाप छोड़ी है। यह सत्य है कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी सशक्तिकरण की पहली शर्त है। आज की नारी के जीवन का सफ़र है। आत्मविश्वास के बल पर आज वह दुनिया में सबसे अलग पहचान बना रही है। आज की नारी आर्थिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर बन गई है। पुरुष प्रधान समाज में नारी के अस्तित्व उसकी सत्ता को स्वीकार करते हुए छायावाद के स्तंभ जयशंकर प्रसाद लिखते हैं कि:-

" तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।।"[14]

नारी घर के अंदर तथा बाहर दोनों में सामंजस्य बिठाकर जीवन निर्वाह करते देखी जाती है। नारी की परिवार तथा कैरियर में तालमेल बिठाकर निभाने वाली भूमिका काबिले तारीफ़ है। शादी के पहले आत्मनिर्भर रहने वाली नारी के जीवन

में अचानक से बदलाव-सा आ जाता है। अब उसके लिए अपना कैरियर तथा परिवार दोनों ही महत्वपूर्ण होते हैं। इस समय अगर वह अपने कैरियर के बारे में गंभीरता से नहीं सोचती तो उसका भविष्य अंधकारमय हो सकता है और परिवार की उपेक्षा की तो दांपत्य जीवन। ऐसी ही कथा लेखिका के 'विज़न' उपन्यास में डॉ. आभा नामक स्त्री पात्र के चरित्र से चित्रित होती है। डॉ. आभा की शादी एक मामूली परिवार में हो जाती है। आभा का पति भी पेशे से डॉक्टर होता है। आभा के मायके की आर्थिक स्थिति ससुराल पक्ष वालों से कहीं अधिक अच्छी थी। आभा शादी से पहले दिल्ली जैसे बड़े शहर में रहती थी लेकिन शादी के बाद वह बरेली में आ जाती है। सबसे पहले आभा को दिल्ली छोड़कर बरेली आना ही बहुत परेशानी देता है लेकिन फिर भी आभा बरेली में आकर रहती है। बाद में कुछ दिनों में ही आभा तथा उसका पति डॉ. मुकुल की आपस में अनबन रहने लगती है। डॉ. आभा आर्थिक रूप से संपन्न नारी थी इसीलिए वह ससुराल को छोड़कर मायके में आ जाती है। आभा की मां उसे बहुत समझाती है लेकिन आभा अपने पति के पास जाने को बिल्कुल तैयार नहीं होती "वह दिन और आज का दिन...न वह गरीब, न मुकुल लेने आए !"[15] आभा तथा मुकुल की लड़ाई के बाद उन दोनों के आपसी संबंध काफी बिगड़ जाते हैं। आभा को लेने डॉ. मुकुल नहीं आए तथा आभा भी अपने 'अहं' के कारण डॉ. मुकुल के पास नहीं गई। डॉ. आभा की मां को अपने बेटी के इस फैसले पर बहुत दुख होता है लेकिन आभा आत्मनिर्भर होने के कारण पति के पास नहीं जाना चाहती। आभा के मां-बाप उसकी चिंता से दिन-रात त्रस्त रहते थे। आभा उन्हें बहुत समझाती लेकिन वह फिर भी उसे डॉ. मुकुल के पास जाने को ही कहते। आभा को अपना बरेली में बिताया हुआ वैवाहिक जीवन याद आता है लेकिन वह डॉ. मुकुल का 'अहं' तोड़ने के लिए उससे अलग होती है "मुझे ऐसी बेवकूफी की बातें याद नहीं करनी चाहिए।"[16] डॉ. आभा अपने पति से अलग रह कर अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है। आभा, मुकुल को कहती है की मैं कोई सीता माता नहीं कि जो तुम कहो वही करूंगी। इस तरह उपन्यास में एक आत्मनिर्भर नारी के जीवन का चित्रण हुआ है जो कि अपने पैसे के बल पर अपनी इच्छानुसार जीवन जीना चाहती है। यहां पर आभा की कोई मज़बूरी नहीं कि उसे अपने ससुराल को छोड़कर पति से अलग होकर रहना पड़े। यहां पर आभा को अपने पैसे के कारण

'अहं' का जन्म होता है। इसी के कारण वह अपने आत्मनिर्भरता को दिखाती है। यहां पर देखने को मिलता है कि उसके ससुराल वाले उस पर कोई दबाव नहीं बनाते फिर भी आभा ससुराल में रहना पसंद नहीं करती। यहां पर पैसे के बल पर रिश्तो को अनदेखा करती एक आत्मनिर्भर नारी का चित्रण किया है। उपन्यास की एक अन्य पात्र नेहा पेशे से डॉक्टर है। उसकी शादी भी एक अमीर डॉक्टर परिवार में होती है। उसके ससुराल वालों का एक आई सेंटर होता है। नेहा आई सेंटर में सबसे होशियार डॉक्टर होती है। नेहा की इसी काबिलियत के कारण शादी का प्रस्ताव भेजा गया था। डॉ. अजय अर्थात नेहा का पति बिना टांके की सर्जरी करने में विशेषज्ञ नहीं था लेकिन डॉ. नेहा इस तकनीक में माहिर थी जिसकी वजह से डॉ. शरण ने नेहा को अपनी बहू के रूप में चुना था "आई एम प्राउड डॉटर इन लॉ। आई एम प्राउड डाटरॅ।"[17] नेहा का ससुर अर्थात डॉ. शरण अपनी बहू पर बहुत गर्व करता है। उसे सभी लोगों से मिलवाते हुए बहुत पसन्नता होती है। डॉ. शरण का अपनी बहु पर गर्व करने का एक विशेष कारण यह था कि उनके अस्पताल को एक बहू के रूप में विज़न विशेषज्ञ मिल गई थी। डॉ. शरण की इस प्रशंसा के पीछे उनकी स्वार्थलिप्सा भी थी लेकिन चाहे कुछ भी हो उपन्यास के इस तथ्य का अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि अगर नारी आत्मनिर्भर है तो वह हर क्षेत्र में सम्मान पाने की हकदार हो जाती है। युग चाहे कोई भी रहा हो स्त्री हर युग में अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। उसने अपने हक, आदर्श और मूल्यों के लिए लड़ना सीखा है इसीलिए आज की नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है। डॉ. नेहा का मानना था कि आत्मनिर्भर नारी कोई भी कार्य कर सकती है। नेहा अपनी मम्मी को बार-बार डॉ. आभा का उदाहरण देती रहती थी। नेहा की मम्मी को डॉ. आभा पसंद नहीं थी क्योंकि आभा ने अपने पति को छोड़कर अलग रहने का फैसला लिया था। इस प्रकार लेखिका ने आज के समय को भी उपन्यास के पात्रों तथा कथा के माध्यम से उजागर किया है। वर्तमान समय में भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी किसी भी समस्या का सामना बड़ी सरलता से कर लेती है क्योंकि उसके पास अर्थ अर्थात पैसा होता है। आज व्यक्ति की नहीं पैसे की इज़्ज़त की जा रही है। धनवान व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सम्मान पा रहा है। आर्थिक रूप से◌े आत्मनिर्भर नारी तमाम बांधाओं के बावजूद भी अपनी निर्भरता को बनाए

रखती है। उपन्यास में भी डॉ. आर. पी. शरण अपने बेटे से ज्यादा अपनी बहू डॉ. नेहा का बखान करता नज़र आता है। अपने बेटे से पहले अपनी बहू का परिचय लोगों से करवाता देखा गया है। लेखिका ने नारी की आत्मनिर्भरता का खुलकर वर्णन किया है, जिसकी नारी आज भी हकदार है। वर्तमान युग की नारी को बंधक बनाकर नहीं रखा जा सकता। चाहे वह गांव की नारी हो या नगर की। सभी ने इन वर्जनाओं को तोड़कर नई मूल्य मर्यादा को संकेत दिया है।

'गुनाह बेगुनाह' शीर्षक उपन्यास में मुख्य पात्र इला चौधरी आत्मनिर्भरता का स्वपन देखती है लेकिन जिस समाज में वह रहती है, उसमें उसका स्वप्न स्वीकार्य नहीं था। इला हरियाणा राज्य के किसी गांव से संबंध रखती थी। इला का सपना था कि वह पुलिस में भर्ती होकर समाज सेवा करें। जिस समाज में इला रहती थी, वहां पर लड़कियों को पढ़ना भी मंजूर नहीं था लेकिन उसके मां-बाप ने उसे बारहवीं तक पढ़ा कर उसकी शादी तय कर दी। इला को यह सब नहीं करना था क्योंकि उसका स्वप्न एक अलग था "बेटा, मंडप के छवते-छवते चली गई तू। अपनी तकदीर लिख ली, समझ। ब्याह हो जाता, बांदी बन जाती। आज तू कहां, हो तेरी बहन कहां ?"[18] इला अपनी शादी वाले दिन घर से भाग जाती है ताकि वह अपने सपनों को पूरा कर सके। उसके इस कदम से उसके घर वाले सारे उसके विरोध में होते हैं लेकिन समय के साथ सब बदल जाता है। इला अपनी नौकरी से छुट्टी लेकर घर जाती है तो उसकी मां इला तथा उसकी बहन की तकदीर में अंतर बताती है। इला तथा उसकी बहन की एक ही दिन शादी होने जा रही थी लेकिन इला ने इसे कबूल न करके अपना अलग मार्ग चुन लिया। इला गृहस्थी में नहीं पड़ना चाहती थी। वह एक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी बनना चाहती थी। दूसरी तरफ इला की बहन की शादी हो जाती है और उसके जीवन तथा इला के जीवन में दिन-रात का अंतर देखने को मिलता है। उसकी मां भी उन दोनों बहनों की तुलना करती है। इस तरह इला की मां के जो वाक्य है उनसे स्पष्ट होता है कि उन्हें अपनी बेटी पर गर्व होता है। इला के सब घरवाले उसके आने पर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बेटी को देख कर गर्व महसूस करते हैं। इला के पुलिस में भर्ती होने के कदम की सब सराहना करते हैं। मां कहती है कि अगर तूने उस दिन शादी कर ली होती तो तेरा भी जीवन अपनी बहन जैसा ही नर्क बन गया होता। इला अपने पापा के सामने आ

जाती है तथा पापा के चेहरे पर एक अलग ही खुशी होती है। इला नौकरी से पहले अपने पापा के साथ नज़रे नहीं मिला पाती थी लेकिन आज नौकरी मिलने के बाद उसकी घर में अलग ही हैसियत हो जाती है। इला अपने पापा के साथ खुलकर बात करती है। वही इला पापा के बहुत नज़दीक आ जाती है। इस प्रकार उपन्यास में एक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी के जीवन का वर्णन किया गया है। जिसमें माता-पिता अपनी बेटी के फैसले पर गर्व अनुभव करते हैं। वर्तमान समय में भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। आज प्रत्येक मां-बाप यही चाहता है कि उसकी बेटी पढ़-लिख कर आत्मनिर्भर बन जाए। मां-बाप का मानना होता है कि बेटी अगर अपने पैरों पर खड़ी हो तो उसे ठोकरे खाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। आज के समाज में आत्मनिर्भर नारी अपनी ज़िदगी के हर फैसले पर अपनी राय देने का हक रखती है क्योंकि वह स्वयं की पालनहार खुद है। आधुनिक नारी के आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण उसके विचारों और मूल्य में भी परिवर्तन की स्थिति को लेखिका ने चित्रित किया है। वर्तमान युग संघर्ष का युग है इस युग में नारी का आत्मनिर्भर होना अति आवश्यक है। आज की नारी प्राचीन भावभूमि से निकलकर, नवीन भूमि में प्रवेश करती है। नारी सामाजिक तथा धार्मिक बंधनों को नकारते हुए स्वतंत्रता का रास्ता चुनना अपना अधिकार समझती है। इन्हीं सब कारणों से आज की नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही है।

4.3 आर्थिक शोषण

जन्म से ही मनुष्य जीवन के साथ समस्या चली रहती हैं, चाहे व्यक्ति कितना भी संपन्न क्यों न हो? वह किसी न किसी समस्या के कारण चिंतित रहता है। समस्या हर तरह की होती है। समस्या वस्तु के अभाव के कारण भी हो सकती है और किसी वस्तु की अधिकता के कारण भी। आज का समय पुराने समय के समान सरल नहीं रहा है। आज का समय जटिल समस्याओं का युग बन गया है। आज मानव का जीवन संघर्षशील बनता जा रहा है। यह संघर्ष शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में होता है। जिससे निपटने का प्रयास मानव हर रूप में कर रहा है। जब वह इन समस्याओं का समाधान करने में सफल होता है तो उसका

दिमाग इस बोझ से मुक्त हो जाता है। मानव जब असफल होता है तो उसके मानसिकता दबती चली जाती है और वह उसी में घुटता चला जाता है।

आधुनिक युग में सबसे बड़ी समस्या 'अर्थ' है। अर्थ के आधार पर समाज अनेक वर्गों में बंटा हुआ है। अर्थ पर ही आज की सामाजिक व्यवस्था निर्भर है। अर्थ के बिना किसी भी क्षेत्र में उन्नति करना असंभव है लेकिन समाज में अर्थ के आधार पर पग-पग पर वर्ग भेद देखे जा सकते हैं। आदिकाल से ही समाज अर्थ के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित हुआ है- उच्च वर्ग, मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग। उच्च वर्ग को छोड़कर मध्यवर्ग और निम्न वर्ग ही अर्थ के कारण अनेक समस्याओं और उलझनों में फंसता चला गया है। अंग्रेजों के काल में भी भारतीय लोग शोषित होते रहे हैं। अंग्रेज लोगों को उनके काम के बदले में पैसा नहीं देते थे। उनसे मनचाहा काम करवाया जाता था। जिसे कि 'शोषण' नाम से अभिहित किया जाता है। "ब्रिटिश राज्य की उत्पत्ति और स्थिति लोभ और द्रव्य के हरण में तथा जनता के शोषण में है। यह देख कर विनाश भी उसी में है।"[19] आज के समय में भी उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग के लोगों से बिना पैसे काम, मज़दूरी करवाता है तो उसे भी शोषण नाम से पुकारा जाता है। लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में ज़मीदारों और साहूकारों द्वारा जनता के शोषण की बात की है। प्रस्तुत उपन्यास 'इदन्नमम' में भी आर्थिक शोषण का वर्णन मिलता है। उपन्यास की मुख्य पात्र मंदा ने देखा कि उसके गांव में गरीब लोग क्रेशर पर मज़दूरी करते हैं। इन लोगों का जीवनयापन क्रेशर पर मज़दूरी करने से कमाए गए धन से ही होता है। इस मज़दूरी में बच्चे, बड़े, बूढ़े सभी लोग शामिल हैं। यहां के लोग बिल्कुल अनपढ़ थे तथा इनके बच्चे भी पढ़ने-लिखने के प्रति जागरूक नहीं होते हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य अपनी रोज़ी-रोटी कमाना था। जिनके लिए यह सब मज़दूर लोग क्रेशर पर काम करते थे। यह मज़दूर लोग अपनी इच्छा बिल्कुल नहीं रख सकते थे। इन मज़दूरों को क्रेशर मालिकों की इच्छा के अनुसार ही कार्य करना पड़ता था। यह मज़दूर क्रेशर मालिकों की चालाकी से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। मंदा को इन मज़दूरों की हालत को जानकर बहुत दुख होता है तथा वह इन क्रेशर मालिको द्वारा हो रहे मज़दूरों के शोषण पर विरोध व्यक्त करती है "मज़दूरी तो नहीं, बेगार करते हैं काकी। दिन भर छिटकी हुई गिट्टी बीनते रहते हैं। बदले में किसी ने दस पैसे हथेली पर रख दिए तो बड़ी

बात।"[20] मंदा को मज़दूर अपनी व्यथा के बारे में बताते हैं। मज़दूरों की व्यथा ऐसी है जैसे कि वह बेगार करते हैं। उन्हें काम के बदले बहुत कम पैसा दिया जाता है। अगर वह मज़दूरी नहीं करते तो क्रेशर मालिकों द्वारा उनकी पिटाई की जाती है। इन्हें पूरे काम के बदले कभी भी पूरा वेतन नहीं दिया गया। इस तरह यहां पर क्रेशर मालिक इन मज़दूरों का भरपूर शोषण करते हुए नज़र आते हैं। यह मालिक गरीब जनता की मज़बूरी का भरपूर फायदा उठाते दिखाए गए हैं। इन्हीं साहूकार लोगों के द्वारा हो रहे शोषण से निम्न वर्ग दो वक्त का भोजन भी नहीं जुटा पाते। उपन्यास में क्रेशर मालिक मज़दूरों को एक-आधी रोटी देकर भी काम करवाता हुआ देखा जा सकता है। उपन्यास में निर्धनता का मुख्य कारण मज़दूरों का आर्थिक शोषण है। अगर इन मज़दूरों को उनके काम के बदले में पूरा पैसा दिया जाए तो उनकी गरीबी दूर हो सकती है। यहां पर उनसे तो थोड़ा बहुत पैसा देकर काम करवाते हुए मालिक नज़र आए हैं। इसके लिए समाज का आर्थिक रवैया जिम्मेदार साबित होता है। निर्धनता ने इन मज़दूरों को पूरी तरह जकड़ लिया है। इन लोगों की प्राथमिक आवश्यकता है- रोटी, कपड़ा और मकान भी पूरी नहीं होती हैं। अगर यह लोग पढ़ाई-लिखाई के बारे में सोचें तो इनके लिए असंभव होगा क्योंकि इन्हें पढ़ाई-लिखाई का कोई ज्ञान नहीं है। इन्हें न ही पता है कि पढ़-लिख कर उन्हें भविष्य में इसका कितना फायदा होने वाला है?

उपन्यास में क्रेशर मालिक मज़दूरों से अवैध काम करवाते देखे गए हैं। क्रेशर मालिकों ने थोड़े से पेड़ों का ठेका लिया होता है लेकिन वह ज़बरदस्ती मज़दूरों से पेड़ कटवाने को बोलते हैं "ठेका तो ले पच्चीस पेड़ों का और कटावे हमसे पचास पेड़ जो। पकरे जायं तो हम जेहन में।"[21] यहां पर क्रेशर मालिक, मज़दूरों से अनुचित कार्य करवाते हैं। क्रेशर मालिकों ने कम पेड़ों के पैसे ही सरकार को दिए होते हैं तथा कटवा अधिक लेते हैं। मालिक यह काम मज़दूरों से ज़बरदस्ती करवाते देखे गए हैं। अगर मज़दूर ऐसा काम करते हुए पकड़े जाते हैं तो ठेकेदार मज़दूरों को फंसा देते हैं। जिसके लिए मज़दूरों को जेल भी हो सकती है। यह मालिक इतने लालची और स्वार्थी प्रवृत्ति के हैं कि मजदूरों की जमानत तक करवाने नहीं आते। इस तरह उपन्यास में मालिकों द्वारा मज़दूरों के आर्थिक शोषण की तस्वीर सामने आई है। लेखिका ने बताया है कि किस तरह गरीब

जनता शोषित हो रही है? वर्तमान समय में भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। स्वतंत्रता के बाद भारत में आर्थिक विकास अवश्य हुआ है लेकिन इस आर्थिक विकास का लाभ सभी लोगों को उपलब्ध नहीं हो रहा है। आज के समय में अमीर व्यक्ति,अमीर होता जा रहा है तथा गरीब अत्यंत गरीब। आज की पीढ़ी भी आर्थिक शोषण को देख तथा झेल रही है। आज के समय में भी कई ऐसे अनपढ़ लोग हैं जो मिल मालिकों से शोषित होते हैं। लेखिका के उपन्यासों को भी पढ़ने के बाद यही ज्ञात होता है कि उच्च वर्ग, निम्न वर्ग का शोषण बड़ी ज़ोर-शोर से करता है। आज अधिक धनवान व्यक्ति धन के प्रति इतना लालायित है कि वह शोषण जैसी बुराइयों को अपना लेता है। भारत में गरीबी का प्रमुख कारण आर्थिक शोषण ही है। जिसके कारण लोगों में समानता न के समान है और न ही कभी आ सकती है बल्कि आर्थिक असमानता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

4.4 आर्थिक संघर्षों का यथार्थ

मूल्यों का संघर्ष आर्थिक स्तर पर भी होता है। आज के समय में व्यक्ति की अर्थ के प्रति लालसा दिन-प्रतिदिन बढ़ जाने के कारण इसमें हर प्रकार के संघर्ष का आना ज़ायज हो गया है। इसने समाज के सभी मूल्यों को दबाकर अर्थात कुचल कर रख दिया है। इसी कारण अब समाज पुरुष प्रधान और नारी प्रधान के स्थान पर अर्थ प्रधान हो गया है। व्यक्ति द्वारा अर्थ को अत्यधिक महत्व देने के कारण परिवारों में भी संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो रही है और यही संघर्ष पारिवारिक मूल्यों में विघटन की स्थिति उत्पन्न करता है "आर्थिक दबाव में सामाजिक पारिवारिक संबंधों में जो बदलाव किया है उससे पति-पत्नी के संबंधों में भी तनाव, कटुता और कलह दिखाई देता है।"[22] संबंधों मे बदलते मूल्यों के लिए आर्थिक परिवेश ही जिम्मेदार ठहराया जाता है। आज के समय में ऐसा अनुभव होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आर्थिक हितों के लिए ही एक-दूसरे से संबंधित है। अर्थ के कारण ही एक-दूसरे से संबंध बनाए जाते हैं जिसके कारण यह संबंध अधिक समय तक नहीं टिक पाते। इन संबंधों के टूटने का कारण यह है कि इनमें स्वार्थ और लालच जैसी प्रवृतियां समाहित होती हैं। कहने का भाव यह है कि जिस कार्य में सामाजिक हित नहीं होगा उसकी नींव भी मज़बूत नहीं

होगी। आर्थिक संघर्षों का यही यथार्थ मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में चित्रित किया गया है। 'बेतवा बेतवा रही' शीर्षक उपन्यास में उर्वशी के घर के संघर्षों का वर्णन किया गया है। उपन्यास की मुख्य पात्र उर्वशी एक बड़े गरीब परिवार में जन्मी थी। ऐसा घर जिसमें रोज़ ही रोटियों के लाले पड़ते थे। इस परिवार के प्रत्येक सदस्य को हर समय पेट भरने की चिंता घेरे रहती थी "वित्ते भर धरती...दूसरों की खेती जोत पर लेते, बटिया पर उठाते। साल भर कड़ी मेहनत करते।"[23] उर्वशी के पिता घर का भरण पोषण करने के लिए किसी दूसरे की ज़मीन पर खेती करते थे। पूरे साल कड़ी मेहनत करके कहीं उन्हें दो वक्त का खाना मिलता था। उर्वशी के बाप के पास खुद की थोड़ी ही ज़मीन थी, जिसके कारण उसे अन्य लोगों की ज़मीन बटिया पर लेनी पड़ती थी। उर्वशी के पिता पर पूरी गृहस्थी की ज़िम्मेदारी थी। कम ज़मीन के बल पर यह परिवार का भरण-पोषण करना बहुत मुश्किल था। उर्वशी का पिता इतनी मेहनत इसलिए करता था कि उसके बच्चे भूखे पेट न सोएं। इस प्रकार उपन्यास में लेखिका ने आर्थिक अभावों में जीते हुए परिवार का चित्रण किया है। पात्रों के आर्थिक संघर्षों को भी उजागर किया है कि किस तरह एक बाप जी तोड़ मेहनत करता है ताकि उसके परिवार वाले भूखे न रहे। वे दूसरों की खेती को जोतता हुआ दिखाया गया है। लेखिका ने दिखाया है कि इंसान अपने पेट के लिए भी संघर्ष करता है तथा पारिवारिक दायित्वों को भली-भांति वहन करने के लिए जी तोड़ मेहनत करता है। आज के समय में भी यही दशा है जिसका यथार्थ लेखिका ने अपने उपन्यास में पात्रों के माध्यम से दिखाया है। इसके साथ ही उपन्यास की पात्र उर्वशी स्वयं को अपने माता-पिता के लिए आर्थिक संकट मानती है। उर्वशी के पिता को उसके विवाह की दिन-रात चिंता सताती रहती है कि इतनी गरीबी में बेटी का विवाह कैसे होगा? जब उर्वशी को अपने पिता की इस परेशानी का कारण पता चलता है तब वह भी बहुत दुखी होती है। वह अपने मन की व्यथा को अपनी सहेली मीरा के साथ सांझा करती हुई देखी गई है "मीरा, भगवान काहे के लाने बिटिया को जनम देता है? वो नहीं जानत कि लड़की पैदा होके कित्तों को विपदा में डार देगी।"[24] उर्वशी अपने जन्म को कोसती है कि उसने बेटी बनकर जन्म क्यों लिया? एक बेटी का जन्म परिवार वालों को कितनी बड़ी विपदा में डाल देता है। उर्वशी की शादी को लेकर उसके भाई अजीत ने भी खर्च उठाने से इंकार कर

दिया था। जिसके कारण शादी की सारी जिम्मेदारी पिता पर आ जाती है। उर्वशी को पता है कि उसके पिता के पास इतना पैसा नहीं है कि वह उसकी शादी कर सके। उपन्यास में एक लड़की के जन्म होने से ही पिता के ऊपर विशेष जिम्मेदारी का प्रदर्शन होता है। भारतीय समाज में यह समस्या विशेष तौर पर देखी जाती है कि एक बेटी के बाप को उसकी शादी के लिए आर्थिक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। उर्वशी के भाई और पिता में आपसी संबंध भी बिगड़ जाते हैं क्योंकि अजीत ने पारिवारिक कर्तव्य को निभाने से मना कर दिया होता है। आज अर्थ के कारण सामाजिक संबंध धराशायी हो रहे हैं। अर्थ के कारण प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़ रहा है। वर्तमान समय में भी एक लड़की के विवाह के समय पिता को कई संघर्षों से गुजरते हुए देखा जा सकता है। आज भी कई ऐसे परिवार हैं जो एक बेटी के विवाह को करने में स्वयं को असमर्थ समझते हैं। इसी कारण आज भी भारत में कई समाजों में बेटी के पैदा होने पर शोक मनाया जाता है। समय के साथ लोगों की धारणा धीरे-धीरे बदल रही है लेकिन फिर भी यह एक समस्या के रूप में विद्यमान है। जिस तरह उपन्यास में आर्थिक संघर्षों का रूप देखने को मिला है, उसी तरह आज भी कई परिवारों अर्थात समाज में पिता को आर्थिक संघर्षों से गुज़रना पड़ता है। उपन्यास में प्रेम और आदर्श के स्थान पर सामाजिक संबंध अर्थ की भूमि पर खड़े हो रहे हैं। आर्थिक कारणों से यह बिगड़ते संबंध भारतीय संस्कृति में मूल्यहीनता पैदा कर रहे हैं। उपन्यास में आर्थिक संघर्षों के कारण पारिवारिक संबंधों में मूल्यहीनता की स्थिति को प्रस्तुत किया है। आधुनिक समाज में अर्थ के प्रति बढ़ती लालसा के कारण सामाजिक संबंधों में तनाव और संघर्ष की स्थिति ने मूल्यों को अत्यधिक प्रभावित किया है। इसी कारण युग की सभी समस्याओं में आर्थिक समस्या के संघर्ष को सर्वोपरि माना गया है। इस तरह व्यक्ति पैसे के पीछे इस तरह भाग रहा है कि वह अपने रिश्तो अर्थात संबंधों को भूलता जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने मूल्यपरक आदर्शों की भी अवहेलना करने लगा है। अब हर रिश्ता अर्थ के कारण दूरियां बनाता जा रहा है जैसा उपन्यास में देखने को मिलता है। एक पिता ही अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है तथा सच्चाई को समझते हुए उसका सामना करता है।

'इदन्नमम' उपन्यास में मज़दूरों के आर्थिक संघर्ष की कथा को व्यक्त किया गया है। यह मज़दूर क्रेशर पर काम करते हैं। इस धूल मिट्टी में काम करने के कारण मज़दूरों को सांस की बीमारी हो गई है। इन मज़दूरों के पास दूसरा कोई मार्ग नहीं है, जिससे कि यह अपना पेट अर्थात भरण पोषण कर सकें। उपन्यास की नायिका मंदा को जब मज़दूरों के संघर्ष व्यथा का पता चलता है तो वह इन लोगों को काम करने से इंकार करती है "जिज्जी, कछु भी खराब होतो रहे, काम तो हर हालत में करना पड़ेगा। नातर खाएंगे कहां से ?"[25] यह सब मज़दूर काम करने को विवश होते हैं। धूल में काम करने से एक मज़दूर के फेफड़े खराब हो गए हैं। यह लोग पैसा तो कमाते हैं लेकिन इतना पैसा नहीं जिससे इनकी रोटी भी पैदा नहीं होती। कई बार इन मज़दूरों को भूखे पेट ही सोना पड़ता है। यहां धूल मिट्टी में काम करने के अतिरिक्त इनके पास कोई मार्ग नहीं है। इतना संघर्ष करने के बाद भी यह अपने लिये दो वक्त का भरपेट खाना भी नहीं खा पाते हैं "पर रोटी के सपने कहां? हम तो चेंच-करमेंथा (चारे की पत्तियां) उबेल रहे हैं। निमक डार के बच्चन को खुला देंगे। नातर सारी रात रोते रहेंगे नासपिटे।"[26] मज़दूर इतने मज़बूर है कि वह अपनी भूख को मिटाने के लिए घास की पत्तियां उबाल रहे हैं, जिन्हें खाकर वे अपना तथा अपने बच्चों का पेट भरते हैं। यहां पर मज़दूरों की आर्थिक स्थिति का वर्णन मिलता है। यह लोग इतने विवश है कि इनके जीवन का यथार्थ संघर्षों से भरा हुआ है। वर्तमान समय में भी मज़दूरों की यही हालत है। लोगों को ऐसे कारखानों या मिलों में काम करना पड़ता है जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है लेकिन पेट की मज़बूरी के कारण इन्हें काम करना पड़ता है। यह लोग काफी तकलीफें झेलने के बाद भी मज़दूरी करते हैं। इस तरह विवेच्य उपन्यास में आर्थिक संघर्ष करते हुए लोगों का चरित्र चित्रण किया है। विडंबना की बात यह है कि मेहनत करने के बावजूद भी यह मज़दूर वर्ग अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते। अपनी बीमारी का इलाज करवाने के लिए इनके पास पैसे भी नहीं होता है। इन मज़दूरों को काम के बदले उतना भी पैसा नहीं दिया जाता है, जिससे कि यह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर सकें। इसके पीछे भी मालिकों का एक गूढ़ उद्देश्य छिपा हुआ है। मालिकों का मानना है कि अगर इन्हें पूरे पैसे दिए जाने लगे तो यह कुछ दिन ही काम करेंगे तथा बाकि के दिन आराम। जिसके लिए मालिकों

को मज़दूरों की कमी की समस्या से जूझना पड़ेगा। उपन्यास में मालिकों द्वारा अपने काम को निकालते देखा है। मज़दूर सभी अनपढ़ हैं इसीलिए यह मालिकों की कूटनीति को नहीं समझ पाते। उपन्यास में लेखिका ने मज़दूरों की अनपढ़ता को भी उनके संघर्षों का मूल कारण बताया है। अगर यह लोग पढ़े-लिखे होते तो इस तरह संघर्ष नहीं करते। यहां पर क्रेशर मालिकों की स्वार्थ लिप्सा सामने आई है। वह स्वयं के हित के बारे में सोचते हैं तथा मजदूरों से संघर्ष करवाते हैं।

'अल्माकबूतरी' शीर्षक उपन्यास में कबूतरा जाति का विवरण प्रस्तुत होता है। यह कबूतरा जाति अपना पारंपारिक धंधा करते हैं जो इन्हें परंपरा से मिला है। इनका धंधा चोरी, लूटपाट करना ही है। यह जंगलों में रहते हैं तथा जंगली पशुओं का शिकार करते हैं। इनके भोजन में भी मांस ही रहता है। इनके पास खेती नहीं होती जिसके कारण यह अन्न ग्रहण कर सकें। इनके पास आय का भी कोई साधन नहीं है। यह अपना जीवन का भरण-पोषण चोरी, लूटमार से ही करते हैं। इसी से इनके घर में पैसा आता है। इन लोगों को समाज में कोई काम भी नहीं देता। इन्हें समाज में हेय की दृष्टि से देखा जाता है। "बिना छत के सोने की आदत डालो। मौसमों को फतेह करो।"[27] यह लोग जंगलों में डेरों में रहते हैं। इनके कोई पक्की ईंटों के घर नहीं होते। इन्हें यहां बिना छत के ही सर्दी, गर्मी में जीवन निर्वाह करना पड़ता है। यहां पर इनके द्वारा अनेक मौसम की मुश्किलों को सहते हुए जीवन व्यतीत करते हुए दिखाएं हैं। इस कबीले के लोगों को बस पेट भरने तक का मतलब होता है। इसी तरह यह संघर्ष करते हुए अपना जीवन व्यतीत करते दिखाए हैं। यह कज्जा लोगों के खेतों से अन्न को चोरी करके लाते हैं तथा कभी-कभार दाल रोटी जुटा लेते हैं। अन्यथा इन्हें गोह का मांस खाना पड़ता है। कबूतरा समाज का एक बालक राणा दाल-रोटी खाने का हठ करता है लेकिन कदमबाई यह सब जुटाने में असमर्थ होती है। कदमबाई अपने बेटे को कबूतरा समाज के रहन-सहन तथा खान-पान के नियमों के बारे में समझाती है। कदमबाई को किसी भी मर्द का सहारा नहीं था जो कि उसके बालक की ज़रूरतों को पूरा करता। कदमबाई अपने तथा अपने बेटे का भरण पोषण स्वयं ही करती है। इसमें कदमबाई अनेक संघर्षों को झेलते हुए अपना तथा राणा का पेट भरते हुए दिखाई गई है।

'विज़न' शीर्षक उपन्यास में भी नेहा एक गरीब अर्थात मध्यवर्गीय परिवार से संबंध रखने वाले लड़की होती है। इसका पिता एक कार्यालय में क्लर्क की हैसियत से नौकरी करता है। नेहा पढ़ने-लिखने में होशियार लड़की थी। नेहा एक दिन पढ़-लिखकर डॉक्टर बन जाती है। नेहा और उसके मां-बाप एक छोटे से घर में रहते हैं। उन्हें एक कमरे में ही गुज़ारा करना पड़ता था, उसी कमरे में रहना था तथा उसी में रसोई होती थी। नेहा का परिवार एक सरकारी कमरे में रहता था। नेहा को भी आर्थिक अभावों में जीना सिखाया गया था। नेहा ने आर्थिक संघर्षों को पार करते हुए अपनी डॉक्टर की पढ़ाई पूरी की तथा एक दिन अपने मां-बाप का सपना पूरा कर दिया। नेहा अपने मायके में अधिक लालसाओं से पली-बढ़ी लड़की नहीं थी "स्कूल से घर...घर से स्कूल। बहुत से बहुत अच्छे-अच्छे कपड़े और जूतों की लालसा।"[28] उपन्यास में नेहा अपनी मेहनत से डॉक्टर की पढ़ाई पूरी करती है। उसकी इसी होशियारी को देखकर एक अमीर परिवार के डॉक्टर बेटे का रिश्ता आता है। नेहा को ऐसे अमीर घर की बहू बनना पसंद नहीं था क्योंकि वह हमेशा आर्थिक संघर्ष करती हुई बड़ी हुई थी। उसके घर का माहौल ही आर्थिक संघर्ष करते हुए जीना सिखाने वाला था। इस प्रकार उपन्यास में लेखिका ने एक आर्थिक संघर्ष को अपने कथा के माध्यम से आवाज़ दी है। डॉ. नेहा अमीरों की साधन सम्पन्नता से दूर रहना चाहती थी। आज के युग में भी हर मां-बाप की यही इच्छा होती है कि उसकी बेटी को ससुराल में आर्थिक तंगी से न गुज़रना पड़े। भले ही उसकी बेटी अपने पैरों पर खड़ी हो। मां-बाप चाहते हैं कि जो मुश्किलें उसने मायके में काटी हैं वैसे ही समस्याओं का सामना उसे आगे ससुराल में जाकर न करना पड़े। इसीलिए मां-बाप अपनी बेटी को अपने से ऊंची हैसियत वाले घर में शादी करवाकर सुख अनुभव करते हैं। युग चाहे परवर्तित हो रहा है लेकिन लोगों की अपने मूल्यों से संबंधित मान्यताओं में बदलाव बहुत कम नज़र आया है। उपन्यास में भी एक पढ़े-लिखी डॉ. नेहा के कामयाबी के पीछे आर्थिक संघर्षों की कथा जुड़ी हुई है।

उपन्यास 'त्रियाहठ' में एक किसान के आर्थिक संघर्ष को मुखर किया गया है। उपन्यास के पात्र जीवन में कई मुश्किलों को झेलते हैं। उपन्यास की मुख्य पात्र उर्वशी का एक बेटा होता है, जिसका नाम देवेश है। उर्वशी के पहले पति की आकास्मिक मृत्यु हो जाने पर देवेश को उसे सिरसा में ही छोड़ना पड़ा था

क्योंकि उर्वशी का कहीं दूसरी जगह ब्याह कर दिया जाता है। उर्वशी के पिता एक गरीब इंसान होते हैं। वह जीवन भर एक विधवा बेटी का भार ढोने में स्वयं को असमर्थ बताते हैं। देवेश सिरसा में अपने ताया के घर रहता है। देवेश को जब अपने नाना की आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है तो उसे बहुत दुख होता है। देवेश को अपनी नाना की इस व्यथा के बारे में उर्वशी की सहेली मीरा द्वारा पता चलता है "खेत बेचना किसान के लिए ऐसे ही है, जैसे बाप दादों को बेचना। बेटियां बेच दी जाती है, बाप-दादे किसी ने बेचे हैं ?"[29] मीरा तथा उर्वशी बचपन की सहेलियां थी, जिन्होंने अपना बचपन एक साथ बिताया था। मीरा की मां बचपन में ही मर जाती है जिसके कारण मीरा को उसके नाना-नानी अपने घर पर ले आते हैं। नाना-नानी ने ही मीरा को बड़ा किया तथा पढ़ाया। मीरा को उर्वशी के घर की सारे दशा मालूम थी। देवेश बोलता है कि अगर नाना को इतनी आर्थिक संघर्षों का सामना करना पड़ा था तो उन्हें अपनी ज़मीन बेच देने चाहिए थी लेकिन मीरा उसे समझाती है कि एक किसान के लिए ज़मीन कितने महत्वपूर्ण होती है। ज़मीन किसान के लिए एक मां के समान होती है, जिसे वह कभी बेच नहीं सकता। एक किसान स्वयं को बेच सकता है लेकिन अपने खेत को नहीं। किसान किसी भी संघर्ष को सहकर, जीवन व्यतीत कर लेगा लेकिन अपनी ज़मीन को कभी नहीं बेचेगा। मीरा, देवेश को ज़मीन के मूल्य के बारे में समझाती है। ज़मीन को बाप-दादों की तरह संजोकर रखा गया है। इस प्रकार उपन्यास में उर्वशी के मां-बाप के आर्थिक संघर्षों की व्यथा बताई गई है। एक किसान भूखा रह लेगा, मर जाएगा लेकिन अपने जीते जी ज़मीन को नहीं बेच सकता। यही हालत उपन्यास में देवेश के नाना की थी। वह आर्थिक मंदी को दूर करने के लिए दूसरों की खेती को आधबटाई पर लेते थे लेकिन अपनी ज़मीन को उन्होंने आंच तक नहीं लगने दी। उन्होंने उर्वशी की पहली शादी अच्छे घर में की चाहे वह सब उन्हें ऋण लेकर ही क्यों नहीं करना पड़ा था? उन्होंने अपने जीवन में अनेक कष्टों को सहा लेकिन अपनी ज़मीन को नहीं बेचा। उपन्यास में पात्र आर्थिक संघर्ष करते हुए जीवन व्यतीत करते देखे जा सकते हैं। वर्तमान समय में भी किसान आर्थिक संघर्ष बेशक करता है लेकिन ज़मीन को कभी नहीं बेचता है। एक किसान ज़मीन को अपनी शान समझता है। लेखिका ने आर्थिक

संघर्षों के कारण बदलते रिश्तो के नए मूल्यों को रेखांकित किया है। उपन्यास के पात्र तमाम बाधाओं को जूझते हुए अपने जीवन को जीते देखे जा सकते हैं।

'फ़रिश्ते निकले' शीर्षक उपन्यास में बेला तथा उसकी विधवा मां की संघर्ष गाथा व्यक्त की है। बेला जब ग्यारह वर्ष की थी, तब उसके पिता की मृत्यु हो गई। बेला की मां ने अनेक संघर्षों को सहते हुए अपना तथा बेला का पालन-पोषण किया। उपन्यास में लेखिका ने बताया है कि जब घर में कोई मर्द नहीं रहता तब एक औरत को न जाने कितने आर्थिक संघर्षों का सामना करना पड़ता है? बेला के पिता की मृत्यु हो जाने पर सारा घर सूना हो जाता है। सारे घर की जिम्मेदारी उसकी मां पर आ जाती है। बेला तो अभी छोटी थी, उसे इन जिम्मेदारियों का कुछ भी ज्ञान नहीं था। कहने का भाव है कि मां और बेटी के जीवन में दुखों ने पैर पसार लिए थे। बेला के पिता पर गांव के लोगों का कर्ज भी था। पिता की मृत्यु के बाद बेला की मां ने खुद संघर्षों को सहते हुए मेहनत करके कर्ज को उतारा। इस कर्ज को उतारना बेला की मां की एक गहन जिम्मेदारी बन गया था। बिना मर्द के घर तथा बेटी का संचालन करना एक महिला के लिए बहुत बड़ी सिरदर्दी बन जाता है लेकिन इन सब समस्याओं के बाद भी बेला की मां ने हार नहीं मानी। उन्होंने वह सब कार्य किए जो एक मर्द कर सकता था। उन्होंने अपने घर में मर्द की कमी को पूरा करने का भरपूर प्रयास किया। "मैं एक बैल उधार लेकर दो बैलों के साथ खुद ही हल चलाऊंगी। थोड़ा सा तो खेत है। आदमी नहीं रहा तो जनी को ही आदमी बनना पड़ेगा।"[30] बेला के पिता की मृत्यु के बाद लोगों ने उनके घर से ऐसा सामान ले जाना ठीक समझा जो औरतें प्रयोग में नहीं ला सकती थी। उनके घर में दो बैल थे। लोग उन दोनों बैलों ले गए। बेला की मां उस समय शोक प्रकट करने में व्यस्त थी। लोगों की ऐसी हरकतों के बारे में उस समय कुछ न बोल सकी लेकिन पिता के क्रियाकर्म करने के बाद बेला की मां ने घर को चलाने के लिए उन सभी चीज़ों को घर में वापिस लाने की ठान ली जो लोग उनके घर से उससे बिना पूछे ले गए थे। जब बेला की मां अपने बैलों को लेने के लिए गई तब उसे एक बैल वापिस किया गया लेकिन बेला की मां ने उस बैल के सहारे ही खेती करने का मन बना लिया। उसने एक बैल उधार लेकर अपने खेतों को जोता। उसका मानना था कि अगर मर्द नहीं रहा तो कोई बात नहीं। एक औरत होकर मर्द की जगह काम करूंगी। उपन्यास में बेला की मां

ने औरतों को साहसी बनने का संदेश दिया है। मर्द के चले जाने से जिंदगी समाप्त नहीं हो जाती। हां ! यह अवश्य है कि उसे अपना भरण-पोषण करने के लिए काफी संघर्ष करने पड़ते हैं। बेला की मां ने मुसीबतों से लड़ना सीख लिया था। उसने अपने शौक को साहस में तब्दील कर दिया था। यहां तक की बेला की मां मज़दूरी करती है। बेला भी स्कूल में पढ़ाई करती थी। उसकी मां से जितना हुआ उसने अपनी बेटी के लिए उतना किया। इस प्रकार उपन्यास में लेखिका ने एक औरत की आर्थिक संघर्षों की कथा प्रस्तुत की है। औरत अर्थ के लिए संघर्ष करती है बल्कि किसी से उधार नहीं मांगती। उपन्यास की पात्र किसी के आगे झुकते नहीं है। परिस्थितियों का डटकर सामना करती हुई देखी जा सकती है। आज का व्यक्ति इतना अर्थ केंद्रित हो गया है की संबंधों को भूल गया है। उपन्यास में भी बेला के रिश्तेदार उन दोनों की सहायता करने की अपेक्षा उनके घर से अपनी ज़रूरतों की चीज़ो को ले जाते दिखाए गए हैं।

4.5 बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति

आज समाज में अर्थ के प्रति बढ़ती लालसा ने मनुष्य को अधिक व्यवसायिक बना दिया है। बढ़ती जनसंख्या और महंगाई ने सबसे अधिक आज की युवा पीढ़ी को प्रभावित किया है। महंगाई बढ़ने से बेरोजगारी जैसी समस्या उत्पन्न हो गई है। बेरोजगारी और बेकारी भी आर्थिक मूल्यों के विघटन का एक कारण है। बेकारी आने से समाज में लोगों का जीवन निर्वाह करना कठिन हो गया है। आज के समय में रोजगार पाने के लिए पर्याप्त योग्यता का होना अनिवार्य हो गया है। इसका सबसे अधिक प्रभाव मध्यवर्गीय समाज पर पड़ा है जो एक-एक पैसा जोड़कर अपनी संतानों को शिक्षित करते हैं ताकि वह रोजगार प्राप्त कर घर की आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकें "हर आदमी इसी फिराक में लगा हुआ है कि कैसे वह ज्यादा से ज्यादा कमा ले इससे ज्यादा इस देश में कोई कुछ सोच ही नहीं पाता।"[31] अलका सरावगी ने अपने उपन्यास 'जानकीपाल तेजपाल मैनशन' में भी लोगों की बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति का वर्णन किया है। लोग पैसा कमाना चाहते हैं चाहे वह तरीका सही हो, गलत? इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। लेखिका ने अपने उपन्यास 'विज़न' में भी पात्रों की बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति का वर्णन किया है। एक पुरुष पात्र डॉ. शरण व्यवसायिक मनोवृति का

स्टीक उदाहरण है जो केवल अपने अस्पताल का हित सोचता है तथा मरीजों के भविष्य का उन्हें कोई ध्यान नहीं है। उन्हें अपने अस्पताल को अधिक से अधिक आर्थिक लाभ करवाना है। यही उनका मुख्य उद्देश्य है। "घोड़ा घास से यारी करें तो खाये क्या? मेडिसन के विशेषज्ञ यदि मरीज भर्ती न करें तो भूखों मर जाएं।"[32] डॉ. शरण अस्पताल में आए मरीजों को बिना किसी वजह से ही बैड दे देता है। उन मरीजों को रखने की कोई आवश्यकता नहीं होती लेकिन उसका मानना है कि अगर इनको डे केयर सर्जरी करके भेज दिया जाएगा तो हम लोग अस्पताल में लगे पंखे, बैड आदि का खर्च कहां से निकालेंगे? डॉ. शरण अपने अस्पताल में आई नई डॉ. नेहा अर्थात अपनी बहू को भी यह सब बातों का ध्यान रखने के लिए कहते हैं। यहां मरीजों के साथ चालबाजी खेली जाती है। मरीजों को क्या पता कि उन्हें किस समय कितने समय के लिए रोका जाएगा? वह डॉक्टर के कहने अनुसार ही सब कार्य करेंगे। अगर वह मरीजों को भर्ती नहीं करेंगे तो वह भूखा मरने के कगार पर पहुंच सकते हैं। इनके सिर पर से ही तो हम रोटी खाते हैं। उपन्यास में अपने व्यवसाय को बढ़ाने की चर्चा व्यक्त हुई है। लेखिका ने उपन्यास में स्पष्ट किया है कि आजकल लोगों अर्थात हर कार्यालय के व्यक्तियों ने पैसे को कमाने का ज़रिया ढूंढ रखा है। कोई भी व्यक्ति ईमानदार नहीं रहा तथा ईमानदारी से अपने व्यवसाय को आगे नहीं बढ़ाना चाहता बल्कि अधिक से अधिक धन प्राप्ति की लालसा के लिए अनुचित कार्य भी करते हुए देखा जा सकता है। प्राचीन समय में जो डॉक्टर अपने मरीज के प्रति पूरी वफादारी से इलाज करता था। आज उसने भी अपनी मनोवृति को व्यवसायिक बना दिया है। नेहा को अपने ससुर की बातों को सुनकर बहुत हैरानी होती है लेकिन बाद में वह भी समझ आती है कि यह सब बातें हमारे तथा अस्पताल के हित में ही है। अगर वह इन बातों को नहीं मानती तो उनका अस्पताल आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी नहीं करेगा। डॉ. नेहा भी इस चुनौती को स्वीकार कर लेती है क्योंकि इसी व्यथा में धनार्जन की संभावनाएं अधिक हैं। उपन्यास में आर्थिक परिवेश, संबंधों में बदलते मूल्यों के लिए ज़िम्मेदार माना गया है। इसी तरह उपन्यास में अपने मनपसंद व्यवसाय का चुनाव करना भी एक व्यवसायिक मनोवृति का कारण माना गया है। प्रत्येक मां-बाप की इच्छा होती है कि उनके द्वारा चलाए गए व्यवसाय को उनकी संतान संभाले तथा उनसे भी ज्यादा उस

क्षेत्र में तरक्की करें। ऐसा ही एक तथ्य उपन्यास में उभर कर सामने आया है। डॉ. आर. पी. शरण का आई सेंटर होता है तथा उसकी इच्छा है कि उसका बेटा भी डॉक्टर बनकर आई सेंटर को संभाले। अजय इतना होशियार नहीं है कि वह डॉक्टर बन पाए। अजय ने मेडिकल के क्षेत्र में अनेक परीक्षाएं दी लेकिन वह सफल नहीं हुआ। उसकी इस हार से डॉ. आर. पी शरण को बहुत दुख होता है लेकिन उन्होंने अपने बेटे को डॉक्टर बनाने की मन में ठान ली। डॉ. आर. पी. शरण अपनी कोशिशों के बाद अजय को डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए भेज देते हैं तथा अजय कुछ सालों बाद डॉक्टर भी बन जाता है। यहां पर एक पिता द्वारा अपने बच्चे को डॉक्टर बनाने के लिए डोनेशन देने का जिक्र मिलता है। जिसमें एक पिता का उद्देश्य अपने बेटे को डॉक्टर बनाकर व्यवसाय को आगे बढ़ाने का होता है। "डिग्री में नहीं लिखा, उस मेडिकल कॉलेज के नाम के साथ चिपकी है। डोनेशन की रकम साढ़े सात लाख।"[33] इस तरह अजय जब डॉक्टर की डिग्री लेकर घर आता है तो उसकी डिग्री में तो नहीं लिखा होता है लेकिन कॉलेज के नाम के साथ चलता है कि वहां से पढ़कर निकले छात्र डोनेशन के सहारे पास होकर आते हैं। अजय अपनी होशियारी से डॉक्टरी पास करके नहीं आता बल्कि पिता द्वारा पैसे भरकर डिग्री लेकर आता है। इस तरह पढ़ाई करने के बाद अजय अपनी डॉक्टरी तकनीक में भी पूरी तरह दक्ष नहीं होता। डॉ. आर. पी. शरण का जो सपना था कि उसका बेटा बिना टांके की सर्जरी करेगा वह पूरा नहीं हुआ। कहने का भाव है कि डॉ. आर. पी. शरण की व्यवसायिक मनोवृति को बढ़ाने का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। इसके बाद डॉ. शरण अपने बेटे के लिए एक होनहार विज़न में माहिर लड़की की तलाश करने में जुट जाते हैं। डॉ. अजय के लिए डॉ. नेहा नाम की लड़की का रिश्ता आता है जोकि बिना टांके की सर्जरी करने की विशेषज्ञ मानी जाती है। इस प्रकार उपन्यास में बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति को पात्रों की कथा द्वारा स्पष्ट किया गया है। उपन्यास में दिखाया गया है कि व्यक्ति अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए किस तरह पैसे का सहारा लेता है? यहां पर पैसे के द्वारा पैसे उगाने का तथ्य सामने आता है। इस तरह लेखिका ने बताया है कि आज पैसे के बल पर आप अपने व्यवसाय को किसी भी तरह आगे बढ़ा सकते हैं। डॉक्टरी का काम कितना रूह कांपने वाला होता है लेकिन आज लोगों ने इसे मज़ाक के तौर पर अपना रहें है। पैसे के बल पर दूसरों की

ज़िन्दगी से खेला जाता है। उपन्यास में अपने व्यवसाय को बढ़ाने के अनेकों तरीकों का वर्णन किया गया है चाहे यह तरीके समाज की दृष्टि से उचित हैं या अनुचित। आज के समय में भी काम को पूजा का दर्जा न देकर पैसे कमाने का साधन बना लिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति पैसे का पीर बनता देखा जा सकता है। भौतिक समृद्धि के कारण व्यक्ति को जीवन और मानवीय संबंधों के प्रति नवीन दृष्टिकोण अपनाने को विवश कर दिया है। व्यक्ति बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति के प्रभाव में अपने आदर्शात्मक मूल्यों का उल्लंघन करने में लगा है। जिसके कारण एक गरीब मरीज तथा अमीर मरीज को एक ही तराजू में तोला जा रहा है जो गरीब अपनी सर्जरी के लिए पैसे बड़ी मुश्किल से जुटा पाता है। आज उसी गरीब से बिना मतलब के पैसे वसूले जा रहे हैं। इसके पीछे डॉक्टर के मन में एक रहस्यात्मक तथ्य यह होता है कि अपनी पढ़ाई पर लगाए पैसे को वसूलना। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह व्यवसाय में आने का मन बना लेता है तथा इस लक्ष्य की भरपाई एक गरीब मरीज को भी करनी पड़ती है।

'चाक' शीर्षक उपन्यास की एक स्त्री पात्र रेशम के पति की आकस्मिक मृत्यु हो जाती है। उस समय रेशम गर्भवती होती है। उसके दो जेठ होते हैं। इन दोनों जेठों की सोच यह होती है कि रेशम इसी घर में रहे क्योंकि उसके पति की मृत्यु के बाद ज़मीन रेशम के नाम होती है। रेशम का एक डोरिया नाम का जेठ है जिसने अपनी शादी नहीं की है। ससुराल वाले चाहते हैं कि रेशम की दूसरी शादी डोरिया से ही कर दी जाए लेकिन रेशम कर्मवीर की विधवा बनकर ही अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है। रेशम डोरिया जैसे व्यक्ति के चंगुल में फंसकर अपना जीवन बर्बाद नहीं करना चाहती थी। घरवाले रेशम को अपने घर में रख कर उसकी ज़मीन भी अपने पास ही रखना चाहते थे। इसी उद्देश्य से वह उसका विवाह डोरिया के साथ करने की सोचते हैं। "पर यहां तो जर-जोरू दोनों पर आंख है।"[34] परिवार वालों का मानना था कि अगर रेशम घर से चली जाएगी तो यह ज़मीन भी उनके हाथ से निकल जाएगी। इसके लिए वह रेशम तथा ज़मीन को अपने ही फायदे के लिए घर में रखना चाहते हैं। उपन्यास में लेखिका ने बताया है कि परिवार वाले एक विधवा के दुख दर्द को न समझ कर उसकी जायदाद को हथियाना चाहते हैं। रेशम के परिवार के सदस्य उसके साथ हमदर्दी नहीं रखते हैं बल्कि स्वार्थ के कारण उसे घर में रखने को बोलते हैं। लेखिका ने बताया है कि

लोग इतने व्यवसायिक मनोवृति के हो गए हैं कि वह इंसान के फ़र्ज़ भूल जाते हैं। आज की पीढ़ी संवेदनहीन और निर्मम होती जा रही है। आज अर्थ की लालसा ने परिवारिक नियमों और मान्यताओं को बदल दिया है। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से अपने स्वार्थ के कारण ही संबंधित अर्थात जुड़ा हुआ है। यह माना जाता है कि अर्थ की अनिवार्यता तो प्राचीन काल से ही स्वीकारी गई है परंतु आज अर्थ समाज तथा युवा पीढ़ी को अत्यधिक प्रभावित कर रहा है। इसके साथ ही व्यक्ति अर्थ के पीछे इस कदर भाग रहा है कि उसे अपनी मान-मर्यादाओं, परंपराओं और मूल्यों का भी ध्यान नहीं है। आज के समय में व्यवसाय के आगे सभी रिश्ते फीके पड़ते जा रहे हैं। इस तरह उपन्यास में स्कूलों की भी यही स्थिति है गांव में स्कूल खुले जाते हैं ताकि बच्चे वहीं पर पढ़कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके लेकिन उपन्यास में स्कूलों की कुछ अलग ही दशा देखने को मिलती है। गांव में स्कूल हैं लेकिन यहां पर स्कूल में छात्रों को रहने के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं है। छात्रों को बैठने के लिए कमरे तक नहीं है। गांव के पंच, सरपंच मिलकर स्कूल खुलवा देते हैं लेकिन इसमें पढ़ने वाले बच्चों के भविष्य की उन्हें कोई चिंता नहीं होती। स्कूल में काम करने के लिए सरकार पैसे भेजती है लेकिन यह गांव के पंच व सरपंच आपस में मिल बांट कर पैसे को हज़म कर लेते हैं। अगर स्कूल का कोई अध्यापक इसका विरोध करता है तो यह लोग उसके तबादले की धमकी देकर चुप करवा देते हैं। उपन्यास में एक मास्टर श्रीधर नाम का व्यक्ति है। श्रीधर गांव के स्कूल में सुधार करना चाहता है। वह गांव के स्कूल में कमरों का निर्माण करके बच्चों के भविष्य के बारे में सोचता है लेकिन गांव वाले स्कूल अध्यापक श्रीधर को स्कूल ग्रांट के फार्म पर ज़बरदस्ती हस्ताक्षर करने को बाध्य करते देखे गए हैं ताकि उस स्कूल ग्रांट का वह निजी लाभ ले सकें। जब श्रीधर उस ग्रांट फॉर्म पर हस्ताक्षर नहीं करता तो गांव के लोग रात को जाकर उस पर हमला कर देते हैं। इस प्रकार उपन्यास में लोगों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति को चित्रित किया गया है।

'झूलानट' शीर्षक उपन्यास में पुरुष पात्र सुमेर पुलिस में कार्यरत होता है। सुमेर एक शहर में रहकर नौकरी करता है। उसकी गांव में शादी होती है लेकिन उसे नापसंद करते हुए वह शहर में दूसरी शादी कर लेता है। सुमेर एक सरकारी

कर्मचारी होता है इसीलिए वह दो पत्नियां नहीं रख सकता। सुमेर द्वारा शहर में की गई दूसरी शादी के बारे में गांव को कोई खबर नहीं होती। इस बात का पता केवल उसकी मां तथा भाई को ही होता है। मां अपने छोटे बेटे को सुमेर की दूसरी शादी के बारे में किसी अन्य को न बताने के लिए कहती है। मां को इतना पता है कि अगर सुमेर की दूसरी शादी के बारे में लोगों को पता चलता है तो उसे नौकरी से खारिज़ किया जा सकता है। शीलो भी इस बात को किसी को नहीं बताती। शीलो की सास उसका बछिया बालकिशन के साथ कर देना चाहती है क्योंकि सुमेर तो शहरी बाबू बन गया है। मां को पता है कि सुमेर गांव में आकर शीलो को अपनाने का सपना तक भी नहीं देखता। सुमेर की अच्छी खासी तनख्वाह है। इस तरह उपन्यास में एक स्त्री, स्त्री के दुख को न समझकर बल्कि अपने बेटे की नौकरी को प्रधानता देती दिखाई गई है। सुमेर पुलिस में कार्यरत होने के बावजूद भी गांव में कभी कभार अपनी ज़मीन को देखने के लिए आता है। गांव आकर सुमेर अपनी पत्नी शीलो से बात तक नहीं करता। वह केवल अपनी ज़मीन को इस उद्देश्य से देखने आता है कि मां उसे गांव की जमीन से बेदखल न कर दे। इसलिए मां को याद करवाने के लिए कि उसका शहर में एक बेटा भी है, वह गांव में आता है। इस तरह उपन्यास में लोगों की व्यवसायिक मनोवृति को दिखाया है। लोग रिश्तो को न समझ कर बल्कि अपनी मानसिक इच्छाओं को पहल देते हैं। इस तरह उपन्यास में अपने बेटे के व्यवसाय के खातिर परिवार वाले एक झूठे व्यक्ति का साथ देते हुए देखे गए हैं। उपन्यास में पात्र किसी की निजी जिंदगी को महत्व न देकर बल्कि अपने बेटे के व्यवसाय को बढ़ावा देने के बारे में सोचते हैं ताकि उसके बेटे के व्यवसाय पर कोई आंच न आए।

इसी तरह 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में अपने व्यवसाय को प्रमुखता देता एक पुरुष पात्र अजीत सामने आता है। अजीत अपनी नौकरी प्राप्त करने के लिए मां के सब जेवर तक बिकवा देता है। मां-बाप द्वारा इतना सब करने के बाद भी अजीत अपने पारिवारिक दायित्वों को नहीं निभाता है। सरकारी नौकरी होने के बाद भी वह अपनी बहन की शादी ऐसे घर में करवा देता है। जहां पर शादी के बदले उसे दस बीघा ज़मीन दी जाती है क्योंकि लड़का तीन बच्चों का बाप होता है। अजीत अपनी बहन अर्थात उपन्यास की नायिका उर्वशी की शादी अपने लालच को पूरा करने के लिए करवाता है। इस तरह लेखिका ने आज के समय

में व्यवसाय के प्रति बढ़ती लालसा को दिखाया है। वर्तमान समय में भी समाज का प्रत्येक व्यक्ति अर्थकेंद्रित हो गया है। अपने स्वार्थ तथा लोभ के कारण पारस्परिक संबंधों को भूलता जा रहा है। आर्थिक मूल्यों के कारण लोगों के संबंधों में परिवर्तन आ गया है। मध्यवर्गीय परिवारों में आर्थिक संकट के कारण संबंधों में तनाव की स्थिति दिखाई गई है। आज के युग में लोग आपसी भाईचारे को भूल रहे हैं। उपन्यास में बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति के कारण लोगों की सोच, मानसिकता और मूल्य बदलते जा रहे हैं। आज की महत्वाकांक्षी पीढ़ी सर्वप्रथम व्यवसायिक क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित करना चाहती है। आज की पीढ़ी में 'मैं' ने स्थान ले लिया है। उपन्यास में भी आर्थिक रूप से बलिष्ठ पात्र के प्रति सारे परिवार का झुकाव रहता है क्योंकि वह पैसे से संपन्न होता है। आधुनिक जगत में बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति के कारण आर्थिक मूल्य में विघटन की स्थिति पैदा हुई है।

4.6 चोरी, डकैती और लूट

मानव मन की अनंत इच्छाएं अनंत होती हैं और अर्थशास्त्र में इच्छाओं को जरूरतें, आराम, ऐशोआराम में विभाजित किया गया है लेकिन इनको अपने आर्थिक साधनों की मर्यादानुसार पूरा करने की प्रवृत्ति की मितव्ययता कहते हैं। इन आवश्यकताओं को जब अनैतिक या अनुचित कार्यों द्वारा पूरा किया जाता है तो उसे चोरी, डकैती और लूट की श्रेणी में रखा जाता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में पात्र अपनी आवश्यकताओं को गैर ढंग से पूरी करते देखे जा सकते हैं। उपन्यासों में पात्र अपनी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति चोरी द्वारा करते दिखाए गए हैं। 'अल्माकबूतरी' शीर्षक उपन्यास में पात्र अपना जीवनयापन चोरी, लूट तथा डकैती द्वारा ही करते हैं। इस उपन्यास में एक कबीले का परंपरा से चला आया धंधा चोरी तथा लूट है। इस उपन्यास में कबूतरा समाज अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति चोरी करके लाए गए सामान द्वारा ही करता है। इस कबूतरा कबीले में बच्चे को पैदा होते ही चोरी करने की सीख दी जाती है "बारह वर्ष की अवस्था तक तीन घड़ियां और एक हज़ार रूपया लूट चुका था।"[35] उपन्यास में जंगलिया नाम का एक पुरुष पात्र है जो कि बारह वर्ष की आयु में ही बड़ी-बड़ी चोरियां करता दिखाया गया है। वह

चोरी करने के बाद जेल भी जाता है लेकिन कुछ समय बाद उसे छोड़ दिया जाता है। जंगलिया ने अपनी इतनी छोटी उम्र में ही एक घड़ी तथा एक हज़ार तक की चोरी की है। इनके समाज में रिवाज़ है कि चोरी करने के बाद चोरी किया गया सामान कबीले के मुखिया को देना पड़ता है। इस चोरी किए गए सामान का कुछ हिस्सा मुखिया को जाता है। इतनी कम उम्र में बालक एक चोर बन जाता है। इतनी छोटी उम्र में चोरी करने के बाद उसकी सारे कबीले में प्रशंसा होती है। जंगलिया जैसे चोर को अच्छे रिश्ते आने लगते हैं क्योंकि उसके जैसा चोरी का हुनर किसी अन्य को नहीं था। इस कबीले में लड़के का विवाह उसकी चोरी के हिसाब से किया जाता था। इसी चोरी के हुनर के कारण कबीले की बहुत ही खूबसूरत लड़की कदमबाई से जंगलिया का विवाह तय होता है। जंगलिया के विवाह में उसका सारा खर्च कदमबाई का बाप ही करता है। इनके कबीले में रिवाज़ था कि लड़की वाले, लड़के वालों से पैसे लेते थे लेकिन जंगलिया की इतनी बड़ी चोरी के बाद कदमबाई के पिता ने इस रिवाज़ को भी तोड़ दिया। लड़के वालों की खूब खातिरदारी की गई। यह बारात लड़की वाले के घर में पन्द्रह दिन तक रुकी। लड़की वालों ने बारात को खूब खिलाया पिलाया और खूब लड़ाईया की। कदमबाई के पिता ने सब बहुत ही खुशी-खुशी किया क्योंकि जंगलिया जैसा चोरी का हुनर पूरे कबीले में किसी अन्य लड़के को नहीं था। इस विवाह में जंगलिया का हुनर पूरे कबीले में सिर चढ़कर बोल रहा था। इस प्रकार लेखिका ने उपन्यास में चोरी को एक मूल्य के रूप में वर्णित किया है। चोरी है तो एक अपराध ही लेकिन उपन्यास में चोरी के कारण पात्र को जेल भी होती है। साथ ही उस कबीले में उसी अपराधी की प्रशंसा भी होती देखी गई है। आज के समय में भी कई ऐसे कबीले हैं जिसमें उनके अपने बनाए हुए रिवाज़ चलते हैं। 'अल्माकबूतरी' भी एक ऐसा ही उपन्यास है जिसमें दो कबीलों की बात की गई है। कदमबाई का विवाह होने के बाद उसका पिता जंगलिया को अपने होनहार दामाद के रूप में स्वीकार करता है। जंगलिया अपने ससुर द्वारा किए गए विवाह का खर्च खुद पर कर्ज लदा हुआ समझता है तथा इस कर्ज को उतारने के लिए मन ही मन शर्मिंदा होता है। जंगलिया इस कर्ज को उतारने के लिए वह मन में ठान लेता है तथा एक दिन चलती गाड़ी से दस मन गेहूं चुरा लेता है। "मायके जा रही थी? दद्दा से शिकायत करने? उसी के लिए तो गेहूंओं

का इंतजाम किया था। दामाद की खातिर लुट गया बेचारा।"[36] जंगलिया की इतनी बड़ी लूट को देखकर कदमबाई चकित रह जाती है। कदमबाई ने इतनी बड़ी चोरी अपनी ज़िन्दगी में आज तक नहीं देखी थी। जंगलिया की इस चोरी की सूचना कबीले के मुखिया को मिल जाती है तथा वह आधी गेहूं मुखिया को दी जाती है। इन लोगों का जीवनयापन इसी तरह चोरी के सहारे किए गए सामान पर ही निर्भर था। यह कबूतरा कबीला अनपढ़ होता है जिसके कारण इनके जीवनयापन का कोई अन्य साधन नहीं होता। इनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य चोरी, लूट करना तथा इसी से अपना घर संसार चलाना है। इनके कबीले में चोरी करने की होड़ लगाई जाती थी कि कौन सबसे बड़ी चोरी करेगा? चोरी करने के लिए कबीले के मर्द कई-कई दिनों तक घर वापस नहीं आते थे। औरतें अपने मर्दों का इंतजार करती रहती थीं, जिसके कारण औरतों का कज्जा पुरुषों की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था। कदमबाई इतनी सुंदर नारी थी कि पूरे कबीले में उसकी समानता में कोई अन्य नारी इतनी सुंदर नहीं थी। कदमबाई कज्जा कबीले के मर्द मंसाराम पर रीझ जाती है तथा उसी मंसाराम का कदमबाई को गर्भ ठहर जाता है। कदमबाई, मंसाराम के बेटे को जन्म देती है। जिसका नाम उन्होंने राणा रखा है। जंगलिया किसी लूटपाट में पकड़ा जाता है तथा मार दिया जाता है। जंगलिया को यह नहीं पता कि उसके घर में पुत्र ने जन्म लिया है। राणा कज्जा जनजाति का खून होता है, जिसमें उन्हीं की मानस प्रवृतियां पाई जाती हैं। राणा चोरी, लूटपाट करना अपना जीवन का लक्ष्य नहीं बनाना चाहता। वह चोरी तथा लूटपाट से घृणा करता है लेकिन कदमबाई द्वारा बार-बार राणा को यही चोरी करने की शिक्षा दी जाती है। इसके विपरीत राणा पढ़ना चाहता है लेकिन कबूतरा कबीले को स्वीकार्य नहीं था "बेटा, अभी कुछ नहीं बिगड़ा, भैंस खोलने का हुनर सीख। सगाई संबंध वाले भी ऐसी कलाकारी सुनकर ही रुपते हैं।"[37] राणा द्वारा कबूतरा कबीले की तरह व्यवहार न करने पर कदमबाई चिंतित रहती है। कदमबाई राणा को समझाती है कि अगर चोरी करेगा, तभी शादी के लिए अच्छे रिश्ते आएंगे। राणा के लिए चोरी करना एक अपराध है तथा वह मां को भी ऐसे अपराधी के रूप में ही देखता है। राणा को मांस खाना भी अच्छा नहीं लगता। वह मां को भी अनैतिक कार्य करने से इंकार करता है। इस प्रकार उपन्यास में अर्थ कमाने के लिए चोरी को उचित माना गया है लेकिन इसके

साथ-साथ इसे अनैतिक भी बताया गया है। यह अंतर कबीलों के कारण देखने को मिलता है क्योंकि एक कबीला पैदा ही चोरी, लूटपाट करने के लिए होता है। इसके लिए चोरी करना एक आर्थिक मूल्य है। उपन्यास में कज्जा कबीले द्वारा पैदा हुआ बच्चा राणा इसे मूल्य विघटन घोषित करता है। जिसके कारण दोनों कबीलों में मूल्य संघर्ष चलता हुआ दिखाई देता है। उपन्यास में राणा अपनी मां को गोह का मांस खाने से इंकार करता है। कबूतरा समाज के पास ज़मीन न होने के कारण उनके पास अन्न खाने की संभावना कम है। वे अपने घर में दाल-रोटी बनाने के लिए कज्जा लोगों की खेती पर ही निर्भर करते हैं। वह कभी- कभार वहीं से चोरी करके गेहूं लाते हैं तथा घर में अन्न पकता है। "बता उड़द-मूंग की दाल खानी है तो खलिहान लूट लेंगे।"[38] कदमबाई, राणा की इच्छा को पूरा करने के लिए खेतों में चोरी करने के लिए बात करती है। यह लोग कज्जा लोगों के खेतों में चोरी करते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर लेते हैं। राणा की कज्जा लोगों की तरह की जाने वाली हरकतों को देखकर कदमबाई को दुख होता है।

कदमबाई एक तरफ तो यह सोचती है कि राणा चोरी करें घर में कमा कर लाए लेकिन साथ ही उसे यह भी डर सताने लगता है कि चोरी करके राणा जेल भी जा सकता है। जिसके कारण उसे सजा भी हो सकती है। कदमबाई को लगता है कि वह एक दिन सोच-सोच कर पागल हो जाएगी। कदमबाई को उसके कबीले वाले समझाते हैं कि अगर राणा कज्जा कबीले में पैदा हुआ होता तो भी हो सकता था कि वह चोरी करता। इस तरह यह ज़रूरी नहीं कि व्यक्ति जिस कबीले में पैदा हुआ है, वहां के हुनर अवश्य सीखता है। इस तरह उपन्यास में कदमबाई सोचती है कि राणा अपने कबीले की तरह चोरी, लूटपाट करें लेकिन साथ ही उसका मन घबराता भी है। कदमबाई राणा की जिद्द के आगे एक दिन हार जाती है क्योंकि राणा ऐसी चोरी, लूट को अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनाना चाहता। राणा मां के आगे अपने पढ़ने की इच्छा को रखता है। कदमबाई उपन्यास के पात्र रामसिंह के पास राणा को लेकर जाती है तथा राणा की इच्छा के बारे में रामसिंह को बताती है। रामसिहं राणा के पढ़ने की इच्छा को देख कर खुश होते हैं तथा कदमबाई को राणा को यहीं पर छोड़ने को कहते हैं। राणा अपना एक थैला लेकर वहां आ जाता है तथा पढ़ने का मन बना लेता है। इस प्रकार उपन्यास में

लेखिका ने चोरी, लूट को आर्थिक मूल्य के रूप में चित्रित किया है। पात्र चोरी को ही अपने जीवन में जीविकोपार्जन का माध्यम बनाते हैं। चोरी के द्वारा किए गए साधनों से ही वह अपना जीवन निर्वाह करते हैं। उपन्यास के कुछ पात्र चोरी को मूल्य विघटन का कारण मानते हैं इसीलिए चोरी, लूट करने से इंकार कर देते हैं। वर्तमान समय में भी कई ऐसे कबीले आज भी विद्यमान है जो अपने पैतृक धंधे को अपनाना ही मूल्य विकास समझते हैं। आज भी कई कबीले अपना जीवनयापन ऐसे ही लूटपाट से करते हैं। उनके जीवन का ध्येय सिर्फ चोरी करना तथा पेट भरना होता है। इन लोगों का कोई सगा, संबंधी नहीं होता। बस जो कमाने के काबिल हो गया, अपना भरण-पोषण खुद करता है। उपन्यास में कदमबाई इसीलिए अपने कबीले के लोगों से अलग है क्योंकि वह कज्जा लोगों के संपर्क में आती है। कज्जा लोगों के गुण कदमबाई में समाए हुए दिखाई देते हैं तथा राणा में आना तो स्वभाविक-सी बात थी क्योंकि राणा कज्जा मर्द का ही खून होता है। इस तरह बाकि सब कबूतरा कबीले के लोगों का उद्देश्य सेंधमारी था तथा चोरी करके डेरे में लौटकर प्रशंसा पाना। राणा यह सब काम को एक अपराध घोषित करते हुए कज्जा लोगों की तरह जीवन व्यतीत करने पर उतारू हो गया था।

'फ़रिश्ते निकले' शीर्षक उपन्यास में भी लोहापीटाओं के समाज का वर्णन किया है। इन लोगों की भी कोई निजी संपत्ति नहीं होती है। यह लोहे के औज़ार बनाते हैं तथा इन्हें बेचने के लिए स्थान-स्थान पर घूमते हैं। इन लोगों की कोई ज़मीन नहीं होती। यह जंगलों में रहते हैं तथा डेरों में निवास करते हैं। यह कोई खुला मैदान देखकर वहीं पर अपना बसेरा बना लेते हैं। खुला आकाश ही इनका घर होता है। उपन्यास में खड़ग सिंह नाम का पात्र लोहे के औज़ार बनाता है। इसके साथ परिवार भी रहता है। इनकी जीविका का साधन लोहे के औज़ार बनाकर बेचना ही होता है "अच्छा तो तुम ही हो लोहा पीट लोग जो दिन में औज़ार बनाते हो और रात के समय उन्ही औज़ारों को इस्तेमाल कर के चोरी करते हो।"[39] उपन्यास में यह लोहापीट लोग अपने आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए चोरी करते हैं। जिसके कारण इन्हें जेल भी जाना पड़ता है। यहां पर लेखिका ने स्पष्ट किया है कि इनकी अनपढ़ता ही इनकी गरीबी का कारण है। अगर यह लोग पढ़े-लिखे होते तो अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति चोरी

करके नहीं बल्कि ईमानदारी से कर सकते थे। आर्थिक मूल्य प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आवश्यक होते हैं तथा इनका निर्वाह कोई व्यक्ति अनैतिक तरीके से करता है तो कोई नैतिकता से। इस प्रकार उपन्यास में चोरी को आर्थिक स्थिति सुधारने का साधन माना गया है। वर्तमान समय में भी लोहापीट लोग घुमक्कड़ जीवन ही व्यतीत करते हैं। इनका कोई निश्चित स्थान नहीं होता जिसके कारण यह लोग पढ़ाई कर सके। यह लोग काम की तलाश में इधर-उधर डेरे लगाते रहते हैं। जिसके कारण इन्हें अपना निवास स्थान बदलना पड़ता रहता है। इस प्रकार उपन्यास में शिक्षा के न होने के कारण आर्थिक मूल्य के विघटन के कारण सामने आते प्रतीत होते हैं। जिसके कारण समाज में तनाव और संघर्ष की स्थिति पैदा होती है। इन लोगों को चोरी के अपराध में जेल भी हो जाती है। युग चाहे कोई भी हो इन लोगों की स्थिति आज भी ऐसी ही है। इन्होंने अपने हकों, आदर्शों और मूल्यों के लिए लड़ना नहीं सीखा है। यह बस अपनी ज़िन्दगी बिताना जानते हैं, चाहे वह चोरी करके हो या किसी अन्य तरीके से। यह लोग अपने जीवन में सुधार नहीं करना चाहते। जिसके कारण दिन-प्रतिदिन आर्थिक मूल्य विघटित हो रहे हैं। लेखिका के उपन्यास तथा आज के समय में बहुत साम्यता देखने को मिलती है। यह समाज उस समय भी अशिक्षित था तथा आज भी अशिक्षित ही प्रतीत होता है। आर्थिक दबाव के कारण इन लोगों की मानसिकता आज भी वैसी ही बनी है जैसे कि कई वर्ष पहले थी। उपन्यास में लेखिका ने आर्थिक मूल्य विघटन के कारणों का वर्णन करते हुए अर्थवत्ता का भी बोध कराया है लेकिन यह समाज अपने भविष्य के बारे में बिल्कुल भी चिंतित नहीं है। उपन्यास में जब चोरी करने के कारण इन्हें उस स्थान से निकाल दिया जाता है तो यह लोग किसी अन्य स्थान पर चले जाते हैं। वहां पर अपना रेहन बसेरा शुरू कर देते हैं। यह अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अन्य कोई व्यवस्था नहीं अपनाते। आर्थिक स्थिति के गिरने का एक प्रमुख कारण लोगों की मानसिकता है, जिसे लोग बदलना नहीं चाहते।

'कही ईसुरी फाग' उपन्यास में ईसुरी और रजऊ की प्रेम गाथा का वर्णन किया गया है। ईसुरी फगवारा होता है तथा वह गांव-गांव जाकर फागें गाता है। फागों में रजऊ शब्द आता है। ईसुरी जिस गांव में जाता है, वहीँ की कई स्त्रियों को उससे प्रेम हो जाता है। रज्जो शादीशुदा नारी होती है और जिसका पति विदेशी फौज

में भर्ती होता है तथा घर से बाहर रहता है। ईसुरी गांव-गांव में घूमता हुआ फागें गाता है तथा इसकी जीविका भी फागों से ही प्राप्त होती है। "ईसुरी फगवारे ने मुसाहिब जु के घर से गहने चुराए हैं। एक लाख के गहने।"[40] इस तरह उपन्यास में ईसुरी पर चोरी का आरोप लगाया जाता है। ईसुरी जिस गांव में अपनी रोज़ी-रोटी कमाता है, उसी में चोरी के आरोप में फंसाया जाता है। इस प्रकार उपन्यास में आर्थिक मूल्य के विघटन का चित्रण किया है। अर्थ की लालसा के कारण आर्थिक मूल्य भी विघटित हो रहे हैं।

अत: लेखिका ने उपर्युक्त उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से आज की उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते सामाजिक संबंधों को आर्थिक आधारों पर टूटते दिखाया है। आर्थिक मूल्य में टकराव के कारण ही समस्याएं जन्म लेती हैं। आज के समय में व्यक्ति इतना अर्थ केंद्रित हो गया है कि वह अपने सामाजिक संबंधों को भूल गया है। उपन्यास में पात्र पैसे के लिए अपने रिश्तो को दांव पर लगा देते हैं। पात्र यह नहीं सोचते कि मेरा परिवार में कितना सम्मान है या नहीं? उनके लिए पैसा ही प्रमुख है। उपन्यास में भाई-भाई का इतना सम्मान और प्रतिष्ठा होने के बाद भी एक भाई, दूसरे भाई को मौत के घाट उतार देता है ताकि उसके हिस्से की ज़मीन को अपने नाम कर सके। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी का समाज में अलग ही पहचान करवाई गई है। लेखिका ने उपन्यास में दिखाया है कि अगर नारी आत्मनिर्भर है तो उसके द्वारा किए गए गलत कार्य भी समय के साथ माफ़ कर दिए जाते हैं तथा उसे अपनाकर घर में अलग ही सम्मान दिया जाता है। लेखिका आज की नारी को अपने उपन्यास के माध्यम से यह संदेश देती है कि अगर नारी अर्थ से परिपक्व है तो कोई भी उसके अस्तित्व को नहीं मिटा सकता बल्कि उसे घर, परिवार तथा समाज में अलग ही पहचान दी जाती है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में लेखिका ने आज के समय में हो रहे आर्थिक शोषण के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई है। आज का एक अनपढ़ व्यक्ति दिन भर मेहनत, मज़दूरी करके भी पेट भर खाना नहीं खा पाता। मज़दूर को मालिक द्वारा इतना पैसा नहीं दिया जाता कि वह अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके। आज का व्यक्ति बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति का शिकार होता जा रहा है। बढती व्यवसायिक मनोवृति ने व्यक्ति के अंदर से मानवता का विनाश कर दिया है। भारतीय समाज में एक

ऐसा पक्ष है जिसके पास भरपेट खाना नहीं और दूसरे पक्ष के पास अंधाधुंध पैसा। ऐसी परिस्थितियों में आर्थिक मूल्य संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। उपन्यास में प्रत्येक पात्र अपने आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यस्त है तथा मज़दूर वर्ग शोषित हो रहा है।

सन्दर्भ सूची :-

1.डॉ. रमेश देशमुख, आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, पृ.110
2.धर्मवीर भारती, मानव मूल्य और साहित्य, पृ.19
3.डॉ. हेमराज कौशिक, अमृतलाल नागर के उपन्यास नए मूल्यों की तलाश, पृ.113
4.डॉ. हेमराज कौशिक, मूल्य और हिंदी उपन्यास, पृ.114
5.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.26
6.वही, पृ.74
7.वही, पृ.122
8.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.100
9.वही, पृ.248
10.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.88
11.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.181
12.वही, पृ.219
13.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.126
14.आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.479
15.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.112
16.वही
17.वही, पृ.38
18.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.159
19.आचार्य श.द.जावड़ेकर, आधुनिक भारत (द्वितीय आवृत्ति), पृ.121
20.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.49
21.वही, पृ.269
22.राहुल भारद्वाज, नवे दशक की हिंदी कहानी में मूल्य विघटन, पृ.125-126

23.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.14
24.वही, पृ.28
25.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.259
26.वही, पृ.260
27.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.113
28.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.68
29.मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृ.74
30.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.18
31.अलका सरावगी, जानकी तेजपाल मैनशन, पृ.124
32.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.46
33.वही, पृ.71
34.मैत्रेयी पुष्पा, पृ.422
35.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.14
36.वही, पृ.15
37.वही, पृ.62
38.वही, पृ.58
39.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.153
40.मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.166